कमल संदेश
ikf{kd if=dk

संपादक

प्रभात झा, सांसद

कार्यकारी संपादक

डॉ. शिव शक्ति बक्सी

सहायक संपादक

संजीव कुमार सिन्हा

संपादक मंडल सदस्य

सत्यपाल

कला संपादक

धर्मेन्द्र कौशल
विकास सैनी

सदस्यता शुल्क

वार्षिक : 100/-
त्रि वार्षिक : 250/-

संपर्क

InL;rk : +91(11) 23005798
Qku (dk-) : +91(11) 23381428
QSDl : +91(11) 23387887

पता : डॉ. मुकर्जी स्मृति न्यास, पी.पी–66, सुब्रमण्यम भारती मार्ग, नई दिल्ली–110003

ई–मेल

kamalsandesh@yahoo.co.in

प्रकाशक एवं मुद्रक : डॉ. नन्दकिशोर गर्ग द्वारा डॉ. मुकर्जी स्मृति न्यास, के लिए एक्सेलप्रिंट, सी–36, एफ.एफ. कॉम्पलेक्स, झण्डेवालान, नई दिल्ली–55 से मुद्रित करा के, डॉ. मुकर्जी स्मृति न्यास, पी.पी–66, सुब्रमण्यम भारती मार्ग, नई दिल्ली–110003 से प्रकाशित किया गया। सम्पादक – प्रभात झा

विषय–सूची

अध्यक्षीय भाषण..... 6

सुरक्षा एवं स्वाभिमान पर प्रस्ताव..... 18

राजनैतिक प्रस्ताव..... 23

लेख

क्या सीबीआई को खुफिया विभाग का पर्दाफाश करना चाहिए ?
– अरुण जेटली..... 28

मुख पृष्ठ : गोवा में आयोजित भाजपा राष्ट्रीय कार्यकारिणी बैठक का उद्घाटन करते भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राजनाथ सिंह एवं अन्य वरिष्ठ नेतागण।

ऐतिहासिक चित्र

भारतीय जनसंघ द्वारा आयोजित बैठक के दौरान श्री अटल बिहारी वाजपेयी, श्री लालकृष्ण आडवाणी, श्री कुशाभाऊ ठाकरे, श्री जगन्नाथ राव जोशी एवं श्री जे.पी. माथुर।

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी बलिदान दिवस (23 जून) पर विशेष

राष्ट्रहित पर पहला बलिदान

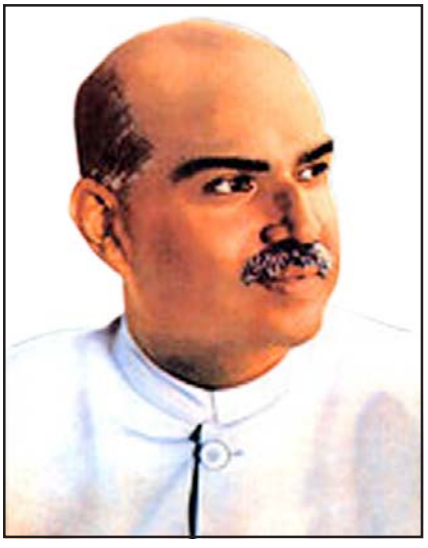

हमारे प्रेरणापुंज और पथ प्रदर्शक डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी महान शिक्षाविद्, चिन्तक और भारतीय जनसंघ के संस्थापक थे। भारतवर्ष की जनता उन्हें एक प्रखर राष्ट्रवादी के रूप में स्मरण करती है। एक प्रखर राष्ट्र भक्त के रूप में, भारतीय इतिहास उन्हें सम्मान से स्वीकार करता है, उनका बलिदान स्वतंत्र भारत में राष्ट्रहित पर पहला बलिदान था, आज जो जम्मू और कश्मीर भारत का अंग है, वह उनके ही संघर्ष के कारण है, उनके बलिदान के कारण है। भारतीय राजनीति में उनकी एक जुझारू, कर्मठ, विचारक और चिंतक के रूप में भारतवर्ष के करोड़ों लोगों के मन में उनकी गहरी छवि अंकित है। वे एक निरभिमानी देशभक्त थे। बुद्धजीवियों और मनीषियों के वे आज भी आदर्श हैं। जब तक यह देश रहेगा तब तक उन्हें सम्मान के साथ 23 जून को हमेशा याद किया जायेगा।

जब पं. जवाहरलाल नेहरु की केंद्र सरकार जम्मू और कश्मीर को सहराष्ट्र का दर्जा दे रही थी, उससे जम्मू और कश्मीर को अलग झंडा, अलग निशान और अलग संविधान का अधिकार मिल रहा था और वहां कोई बिना परमिट प्रवेश नहीं कर सकता था ......! तब डॉ. मुखर्जी ने न केवल विरोध किया बल्कि पूरे देश में में एक बड़ा आन्दोलन खड़ा किया। उन्होंने गर्जना की कि एक देश में दो प्रधान, दो निशान और दो विधान नही चलेंगे...!! डॉ. मुकर्जी जम्मू-काश्मीर को भारत का पूर्ण और अभिन्न अंग बनाना चाहते थे। यह अधिकार देने वाली धारा 370 का खुल कर विरोध किया। एक विशाल सभा में डॉ. मुखर्जी ने घोषणा की कि मैं जम्मू और कश्मीर में बिना परमिट प्रवेश करूंगा क्योंकि वह भारत का अविभाजित अंग है।

संसद में अपने ऐतिहासिक भाषण में डॉ. मुकर्जी ने धारा-370 को समाप्त करने की भी जोरदार वकालत की थी। वे 1953 में बिना परमिट लिए जम्मू काश्मीर की यात्रा पर निकल पड़े। जहाँ उन्हें गिरफ्तार कर नजरबंद कर लिया गया। 23 जून, 1953 को रहस्यमय परिस्थितियों में उनकी मृत्यु हो गई। वे भारत के लिए शहीद हो गए, सही मायने में उनकी हत्या हुई थी। मगर उनके रास्ते पर भारतीय जनसंघ चला लम्बे सघर्ष के बाद अब वहां भारत का झंडा है, वहां पहले प्रधान मंत्री था अब मुख्य मंत्री हो गया है, भारत का निशान हो गया है, सर्वोच्च न्यायलय का अधिकार क्षेत्र हो गया है, मगर अभी भी विशेष राज्य का दर्जा उसे हासिल है। इतने एकीकरण के लिए डॉ. मुखर्जी के बलिदान को ही श्रेय जाता है।

- अरविन्द सिसोदिया

~~~~~~~~~~☯☯☯~~~~~~~~~~

"जो राष्ट्र अपनी पूर्व उपलब्धियों के प्रति गर्व अनुभव नहीं करता है अथवा उनसे प्रेरणा नहीं लेता है वह न तो अपने वर्तमान को सुधार सकता है और न ही अपने भविष्य की योजना बना सकता है। दुर्बल राष्ट्र महानता प्राप्त करने में सदैव असमर्थ रहता है।"

-डा. श्यामाप्रसाद मुकर्जी

~~~~~~~~~~☯☯☯~~~~~~~~~~

देश की धड़कन को समझे कांग्रेस

सम्पादकीय

भारत का प्रधानमंत्री कौन बनेगा! यह सवाल देश के 35 राज्यों में रहने वाले सवा सौ करोड़ से अधिक की आबादी में गूंजने लगा है। कांग्रेस यह दावा कर नहीं सकती कि वह आगामी चुनाव डॉ. मनमोहन सिंह के नेतृत्व में लड़ेगी। भाजपा तब तक प्रधानमंत्री प्रत्याशी का नाम घोषित नहीं कर सकती जब तक भाजपा संसदीय बोर्ड और एनडीए के मंच पर आगामी प्रधानमंत्री प्रत्याशी का नाम तय न हो। लेकिन देश की धड़कन समझने की कोशिश दोनों बड़े दलों को करना होगा। देश क्या चाहता है? देश यह तो नहीं चाहता कि डॉ. मनमोहन सिंह फिर प्रधानमंत्री बने। देश यह भी नहीं चाहता कि राहुल गांधी प्रधानमंत्री बने। इसीलिए कांग्रेस को भी देश की धड़कन राजनैतिक आला (स्टेथोस्कोप) लगाकर समझना होगा। भाजपा को भी इस दिशा में प्रयास करना होगा। समय पर चुनाव हुए तो मात्र एक वर्ष में ही आम चुनाव आ जाएंगे।

विचार करने योग्य बात है कि आज देश में हम गुजरात की ओर देखें तो समझ में आता है कि गुजरात ने सिर्फ विकास ही नहीं किया बल्कि वहां पर भारतीय जनता पार्टी ने कांग्रेस को जमींदोज कर दिया है। इसका उदाहरण हाल ही में आए दो लोकसभा उपचुनाव और चार विधानसभा उपचुनाव के परिणाम हैं। जहां कांग्रेस उपचुनाव में एक भी सीट नहीं जीत पाई, वहीं उल्टे भाजपा ने कांग्रेस से गुजरात में सभी सीटें छीन ली। यह कांग्रेस के लिए आत्ममंथन की बात है। चार विधानसभा एवं दो लोकसभा उपचुनाव जीतने के बाद गुजरात की धरती से यह आवाज आने लगी कि पहली बार ऐसा होगा कि मोदी के नेतृत्व में गुजरात की प्रत्येक लोकसभा सीटें भाजपा जीतेगी।

गुजरात में जो सबसे महत्वपूर्ण घटना घट रही है वह है कांग्रेस के नेतृत्व-नस्ल का समाप्त होना। जरा गौर करें और एक नजर दौड़ाएं- तीन बार से मुख्यमंत्री कौन बन रहा है? स्थिति कांग्रेस की कितनी दयनीय हो गई कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के तृतीय वर्ष किए हुए घोषित रूप से जो वर्षों जनसंघ-भाजपा नेता रहे, जो आज भी कहते हैं कि संघ का आदेश हो जाए तो कांग्रेस छोड़ देंगे, ऐसे व्यक्ति को कांग्रेस ने अपना प्रतिपक्ष का नेता बनाया है। कांग्रेस नेतृत्व के मामले में गुजरात में बांझ हो गई है। क्या कांग्रेस कभी इस पर विचार कर सकती है और यही कारण है कि आज कांग्रेस के भीतर भी शंकर सिंह बघेला स्वीकार नहीं किए जा रहे हैं। वही दूसरी ओर देखें तो गुजरात जनता पार्टी बनाकर पूर्व मुख्यमंत्री केशुभाई पटेल ने भी जोर-आजमाईश करने की कोशिश की पर गुजरात की जनता ने उन्हें जीताकर उनकी उम्र और अनुभव का सम्मान किया लेकिन वे एक से दो भी नहीं हो पाए। केशुभाई भी जनसंघ-भाजपा की पहचान बनकर ही वहां काम करते थे। चुनाव जीतने के बाद नरेन्द्र भाई मोदी सबसे पहले केशुभाई के घर गए और उनके राजनीतिक अनुभव को प्रणाम किया।

गुजरात की धरती हिन्दु-मुसलमान नहीं देख रही। वह सद्भावना की मिसाल बनकर उभर रही है। टोपी नहीं पहनना किसी चीज का विरोध नहीं होता है। जब किसी चीज को पहनने से धर्म का संकेत जाता हो तो उसे पहनने के लिए कोई किसी को बाध्य नहीं कर सकता। हम किसी मुस्लिम को टीका लगाने के लिए बाध्य नहीं कर सकते। आज गुजरात में मुस्लिमों के बीच भी सर्वाधिक लोकप्रिय व्यक्तित्व का नाम नरेन्द्र मोदी है। सवाल इस बात का नहीं है कि भाजपा ने किसी मुस्लिम को टिकट नहीं दिया। सवाल इस बात का है कि मुस्लिम गुजरात में अमन-चैन से रह रहे हैं या नहीं और उनके सम्मान में बढ़ोत्तरी हो रही है या नहीं! भाजपा का सर्वधर्म-समभाव में अटूट विश्वास

है। यहां एक और बात रखना आवश्यक सा लगता है कि देश में वैचारिकता की आड़ में गोलबंद होकर कमर के नीचे जाकर गत दस वर्षों में नरेन्द्र मोदी के खिलाफ प्रायोजित तरीके से वार किया गया। शायद भारत में किसी भी नेता के खिलाफ, जो लगातार विजयी होता रहे, इस प्रकार का कुप्रचार नहीं किया गया। कांग्रेस की हर साजिश गुजरात में फेल हो गई। और स्थिति इतनी बदतर हो गई कि आज कांग्रेस गुजरात में पूरी जमीन खो चुकी है। जमीन ही नहीं खो चुकी, उनका नेतृत्व भी समाप्त हो चुका है।

बात करें मध्य प्रदेश की, तो वहां पर भी पिछले साढ़े चार वर्षों में हर विधानसभा चुनाव कांग्रेस हारी है और भाजपा जीती है। इतना ही नहीं तो जितने भी विधानसभा के उपचुनाव हुए वे सभी कांग्रेस के थे। लेकिन शिवराज सिंह चौहान की लोकप्रियता और भाजपा संगठन की ताकत ने संयुक्त रूप से कांग्रेस से सभी सीटें छीनकर मध्य प्रदेश की जमीन पर भी कांग्रेस को धूल चटाई।

आज मध्य प्रदेश में भी यही स्थिति हो गई है कि कांग्रेस नेतृत्वहीन और संगठनहीन हो चुकी है, हालांकि कांग्रेस विधानसभा के आगामी चुनाव जो चार माह बाद होने हैं, लड़ने के लिए संगठनात्मक एकता का नाटक कर रही है। कांग्रेस यह भी जानती है कि भाजपा जब तीसरी बार चुनाव जीतेगी तो मध्य प्रदेश भी एक नए गुजरात के रूप में उभरकर आएगा, जहां न केवल प्रदेश का विकास जीत का आधार बनेगा वहीं कांग्रेस जड़ से समाप्त हो जाएगी। आगामी विधानसभा चुनाव के लिए रात-दिन जी-तोड़ परिश्रम करने का समय है। भाजपा को एकजुट होकर तीसरी बार सरकार बनाने में सबको साथ लेकर जीतने की दिशा में कदम बढ़ाना होगा। आज भी मध्य प्रदेश में स्थिति यह है कि जैसे ही दिग्विजय सिंह जी का नाम आता है तो लोग मध्य प्रदेश में उनके कार्यकाल के दौरान की बदहाली को देखने लगते हैं। बात रही केंद्रीय मंत्री कमलनाथ जी की। वे गत तीन दशकों में पूरे मध्य प्रदेश के जिले का दौरा नहीं कर पाए हैं। वे छिंदवाड़ा नेता के तौर पर जाने जाते हैं न कि कांग्रेस नेता। बात रही ज्योतिरादित्य सिंधिया की, उनका शटल गुना और ग्वालियर के बीच चलता है। वे भी अब तक मध्य प्रदेश के पूरे जिलों का दौरा नहीं कर पाए हैं। अब वर्तमान नेतृत्व कांतिलाल भूरिया और अजय सिंह की बात करें। वे तो स्थानीय नेताओं की श्रेणी में आते हैं। कांग्रेस ने कांतिलाल भूरिया को भले ही प्रदेश अध्यक्ष बना दिया और अजय सिंह को प्रतिपक्ष का नेता लेकिन इन दोनों नेताओं का प्रांतीय स्तर पर मानसिक विकास अभी तक नहीं हो पाया है। मध्य प्रदेश में भाजपा के लिए सुनहरा अवसर है। वह एकता के सूत्र में बंधकर इस चुनाव को हर हाल में जीते। यहां जहां भाजपा की जीत होगी वहीं कांग्रेस वर्षों के लिए जमीन के भीतर धंस जाएगी।

नक्सली घटना के बाद छत्तीसगढ़ में कांग्रेस को ऐसा लगने लगा है कि वह छत्तीसगढ़ में भाजपा से आगे निकल सकती है लेकिन कांग्रेस यह बात भूल रही है कि जनता में यह सवाल बहुत तेजी से उभरकर आ रहा है कि आखिर नक्सलियों के माध्यम से आदिवासी नेता महेन्द्र कर्मा, कांग्रेस अध्यक्ष नंद कुमार पटेल और उनके बेटे की हत्या कराने में कांग्रेसियों का हाथ क्यों सामने आ रहा है! क्या यह बात सच नहीं है कि नक्सलियों से कांग्रेस के सम्बंध हैं। क्या यह बात सच नहीं है कि कांग्रेस के अंदर ही नेतृत्व को लेकर अन्तर्कलह मचा हुआ था। छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह की जनहितकारी योजनाओं और उनकी सरलता, सहजता, आदिवासियों के प्रति उनका लगाव उनकी लोकप्रियता में चार चांद लगाया है। छत्तीसगढ़ में भी भाजपा यदि एकजुटता और सामूहिकता का परिचय दे तो कांग्रेस दहाई में भी विधानसभा की सीटें नहीं जीत सकती।

बात रही राजस्थान और दिल्ली की। इन दोनों राज्यों के विधानसभा चुनावों में जनता परिवर्तन की बाट जोह रही है। राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत लोकप्रियता में श्रीमती वसुंधरा राजे के सामने शून्य की स्थिति में आ गये हैं। यही हालत लगभग दिल्ली में तीन बार से जीत रही कांग्रेस और कांग्रेस की नेता शीला दीक्षित की है। इन दोनों राज्यों में भाजपा को तय करना होगा कि वह यदि कांग्रेस को पराजित करना चाहती है तो उन्हें जनता को यह विश्वास दिलाना होगा कि आंतरिक रूप से भाजपा एक है और उनका एकमात्र लक्ष्य है कांग्रेस को पराजित करना। जनता में अगर यह बात पैठ कर गई कि भाजपा दोनों राज्यों में कांग्रेस को पराजित करने की स्थिति में आ गई है, जनता को भाजपा को जिताने में और अत्यधिक बल मिलेगा।

आज भाजपा की पहली प्राथमिकता चारों राज्यों में चुनाव जीतना है। इन चारों में जीतने की सारी संभावनाएं मौजूद हैं और भाजपा इन चारों राज्यों में जीतने के बाद आगामी लोकसभा में जीत की ओर प्रयाण कर सकती है। ■

अंतिम और निर्णायक विजय भाजपा की होगीः राजनाथ सिंह

भारतीय जनता पार्टी की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक 08 एवं 09 जून, 2013 को गोवा में संपन्न हुई। इस बैठक में अध्यक्षीय भाषण देते हुए भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राजनाथ सिंह ने यूपीए सरकार पर जमकर प्रहार किया। उन्होंने कहा कि कांग्रेस का पूरा इतिहास भ्रष्टाचार को संरक्षण देने का रहा है। श्री सिंह ने क्षोभ व्यक्त करते हुए कहा कि यूपीए सरकार ने अपने शासनकाल में लगभग सभी संवैधानिक संस्थाओं और पदों का राजनीतिक दुरुपयोग करने में किसी प्रकार का संकोच नहीं किया है चाहे वह CBI जैसी जांच संस्था हो या गवर्नर जैसे संवैधानिक पद, कांग्रेस पार्टी ने राजनीतिक स्वार्थ की पूर्ति के लिए बिना विपक्ष को विश्वास में लिए मनमानी की है। उन्होंने उपस्थित प्रतिनिधियों को विश्वास दिलाते हुए कहा कि अंतिम और निर्णायक विजय हमारी ही होगी।

हम अध्यक्षीय भाषण का पूरा पाठ यहां प्रकाशित कर रहे हैं :

मित्रों, हम पिछली कार्य समिति में मार्च के प्रथम सप्ताह में दिल्ली में मिले थे। विगत तीन महीनों में देश में बहुत कुछ घटित हुआ है। कुछ बहुत दुखद और दुर्भाग्यपूर्ण घटनायें भी हुई हैं। जैसे छत्तीसगढ़ में कांग्रेस पार्टी की एक यात्रा पर बर्बरतापूर्ण नक्सली हमला हुआ जिससे पूरा देश स्तब्ध है। इसी दुखद घटना के कारण भारतीय जनता पार्टी ने 27 मई से 2 जून तक अपना प्रस्तावित 'जेल भरो आन्दोलन' भी स्थगित कर दिया। मैं भारतीय जनता पार्टी की ओर से इस हमले में मारे गये सभी राजनेताओं, राजनैतिक कार्यकर्ताओं, सुरक्षा बल के जवानों और आम जनता के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

इसी बीच कुछ उत्साहजनक घटनायें भी हुई हैं जैसे हाल ही में सम्पन्न लोकसभा और विधानसभा के उप-चुनावों में हमने गुजरात में शानदार सफलता प्राप्त की। हमने सभी सीटें कांग्रेस से छीनी है। हमारी विजय का अंतर भी बढ़ा है। इस हेतु मैं गुजरात के मुख्यमंत्री नरेन्द्र भाई मोदी, गुजरात के प्रदेश अध्यक्ष और सभी भाजपा कार्यकर्ताओं को बधाई देता हूं और गुजरात की जनता के प्रति आभार व्यक्त करता हूं।

मित्रों, आज हम गोवा की इस भूमि पर हैं। इस भूमि पर आकर महाकवि कृष्णदास सामा की याद स्वत: आ जाती है। 16वीं शताब्दी के इस महाकवि ने कोंकणी और मराठी में न सिर्फ महाभारत और रामायण का अनुवाद किया बल्कि कृष्ण चरित्र कथा को तत्कालीन प्रतिकूल परिस्थितियों से निपटने के लिए एक प्रेरक संकल्प के रूप में स्वर दिया।

गोवा की धरती इतिहास की उस घटना की साक्षी है जब पश्चिम (यूरोप) भारत का रास्ता पाने के लिए बेचैन था। कहीं कोलंबस तो कहीं वास्कोडिगामा, कहीं पश्चिम तो कहीं दक्षिण से भारत का रास्ता खोजने में लगे थे और उसी सिलसिले में पुर्तगाल के वास्कोडिगामा भारत पहुंचने वाले पहले पश्चिमी नागरिक बने। भले ही गोवा 450 वर्षों से अधिक तक पुर्तगाल के प्रभाव में रहा हो परन्तु यह इस बात को भी दर्शाता है कि पराधीन होने के बावजूद भी भारत उस समय समृद्धि के उस शिखर पर था कि हर कोई उस तक पहुंचना चाहता था। मुझे विश्वास है कि गोवा की इस धरती से हम सब यह संकल्प लेंगे कि भाजपा के नेतृत्व में पुन:

भारत को उस परम वैभव तक पहुंचाना है कि उत्तर-दक्षिण और पूरब-पश्चिम से आने वाला हर यात्री कोलंबस और वास्कोडिगामा की तरह भारत में ही पहुंचने का सपना देखे।

स्वामी विवेकानन्द

इस वर्ष पूरा देश स्वामी विवेकानंद की 150वीं जयंती मना रहा है। वे आधुनिक भारत के इतिहास में अन्तर्राष्ट्रीय धरातल पर भारत की युवा शक्ति के प्रथम हस्ताक्षर थे। आज भूमंडलीकरण के इस दौर में यह प्रश्न किया जा सकता है कि 19वीं सदी के एक युवा विचारक की बातें आज 21वीं सदी के युवाओं के लिए कोई प्रासंगिकता रखती हैं क्या? वे एक प्रबुद्ध विचारक ही नहीं बल्कि युगदृष्टा भी थे। आज जब भारत कि युवा पीढ़ी नई ऊंचाइयों को छूना चाह रही है तो उसे भारत और अपने भविष्य के बारे में क्या सावधानी रखनी है इस विषय पर स्वामी जी ने जो कुछ कहा था वह आज अत्यंत प्रासंगिक लगता है।

अमेरिका की अपनी ऐतिहासिक यात्रा के बाद 25 जनवरी 1897 को रामेश्वरम् में जब उन्होंने भारत की धरती पर आने के बाद अपना पहला उद्बोधन दिया तो उन्होंने भारत माता के विषय में कहा कि "She is awakening, this motherland of ours, from her deep long sleep." उन्होंने भारत और भारत की चेतना के विषय में कहा This nation still lives; the raison d'etre is, it still holds to God, to the treasure-house of religion and spirituality'. उसी उद्बोधन में उन्होंने युवाओं को संदेश देते हुए कहा 'assimilate what you can learn from every nation, take what is of use to you. But stand on your own feet; hold on to your own spirituality; to your own religion; to your own values."

आज उन्हीं आध्यात्मिक मूल्यों के क्षरण के कारण देश शासन सत्ता से लेकर खेलकूद तक सभी में अनैतिक भ्रष्टाचार में डूबता चला जा रहा है। स्वामी विवेकानंद के विचारों को हमें देश के जनमानस तक पहुंचाने का प्रयास करना चाहिए। मैं भाजपा शासित राज्यों के मुख्यमंत्रियों से कहना चाहूंगा कि स्वामी विवेकानंद के प्रेरणादायी जीवन के अंश पाठ्यक्रमों में शामिल किये जाने चाहिए।

कांग्रेस नेतृत्व के शासन में व्यवस्थाओं का विध्वंस

जून का महीना भारत के राजनैतिक इतिहास में एक और दुर्भाग्यपूर्ण घटना की याद दिलाता है। वह है आपात्काल। मूल्यों का क्षरण और सत्ता का मद पूरे के पूरे राष्ट्र और समाज को इस प्रकार से आहत कर सकता है इसका प्रमाण देश ने जून 1975 में देखा था। परंतु यही जून का महीना हमें यह भी याद दिलाता है 6 जून 1974 को ही जे.पी. के नेतृत्व में एक समग्र क्रांति प्रारम्भ हुई थी जिसमें तत्कालीन जनसंघ के रूप में भाजपा ने अग्रणी भूमिका निभाई थी। राजनीति में सृजन और विध्वंस दोनों में जून का महीना मील का पत्थर रहा है। आज एक बार पुन: कांग्रेस नेतृत्व की सरकार देश की सभी व्यवस्थाओं को ध्वस्त करने में लगी हुई है। इन व्यवस्थाओं को बचाने के लिए एक नये राजनैतिक आन्दोलन की आवश्यकता है।

मित्रों, पिछले महीने केन्द्र की कांग्रेस नेतृत्व वाली यूपीए सरकार ने अपने दूसरे कार्यकाल के चार वर्ष पूरे किए। उन्होंने दंभपूर्वक अपने मुंह मिंया मिट्ठू बनते हुए अपना रिपोर्ट कार्ड स्वयं जारी किया। किसी भी रिपोर्ट कार्ड पर कुछ टिप्पणियां होती हैं जो उसकी हकीकत को बयान करती हैं। मैं यपीए सरकार के चार साल के रिपोर्ट कार्ड पर केवल चार टिप्पणियों का उल्लेख करना चाहूंगा।

जून का महीना हमें यह भी याद दिलाता है 6 जून 1974 को ही जे.पी. के नेतृत्व में एक समग्र क्रांति प्रारम्भ हुई थी जिसमें तत्कालीन जनसंघ के रूप में भाजपा ने अग्रणी भूमिका निभाई थी। राजनीति में सृजन और विध्वंस दोनों में जून का महीना मील का पत्थर रहा है।

1. 2-जी घोटाले पर सीएजी की टिप्पणी,
2. कोलगेट पर सीबीआई के शपथपत्र पर सर्वोच्च न्यायालय की टिप्पणी,
3. भारतीय अर्थव्यवस्था पर अंतर्राष्ट्रीय रेटिंग एजेंसियों की टिप्पणी,
4. इसी 31 मई को केन्द्र सरकार द्वारा विकास दर दशक के सबसे निचले स्तर पांच प्रतिशत से भी कम पर पहुंचना।

ये तर्क नहीं है बल्कि ये तथ्य है। इसमें कोई लॉजिक नहीं है बल्कि विशुद्ध मैथमेटिक्स है। मुझे आश्चर्य है है कि आंकड़ों के आईने में यह विद्रूप चेहरा साफ दिखने के बावजूद यूपीए सरकार तरह-तरह के स्वांग रचाकर जनता को भरमाने का प्रयास कर रही है। यूपीए ने जनता को इस कदर भ्रमित किया और झूठे वायदे किए उसकी एक बानगी तो हम सब लोगों को 100 दिन के अंदर मंहगाई खत्म करने के वायदे के रूप में याद है।

मैं एक दूसरा उदाहरण याद दिलाना चाहूंगा कि अभी मई

के अंतिम सप्ताह में वर्ल्ड बैंक की ग्लोबल ट्रैकिंग फ्रेम वर्क रिपोर्ट (Global Tracking Framework Report) जिसके अध्ययन के अनुसार पूरी दुनिया में उन लोगों की संख्या जिन्हें आज भी बिजली उपलब्ध नहीं हैं, उसमें सबसे बड़ी संख्या भारत में है। इस रिपोर्ट के अनुसार भारत में 30 करोड़ से अधिक लोगों की पहुंच में बिजली नहीं है।

याद कीजिए जुलाई 2008 जब भारत-अमेरिकी नाभिकीय समझौते को पास कराने के लिए कांग्रेस ने 'वोट फॉर कैश' कांड के द्वारा संसदीय लोकतंत्र की गरिमा को तार-तार कर दिया था और समाजवादी पार्टी तथा कुछ अन्य दलों के समर्थन से इस समझौते को पास कराया था तब सरकार ने बड़े-बड़े वादे करते हुए कहा था कि इस समझौते के पास होने के बाद बहुत जल्द भारत में बिजली की समस्या का समाधान हो जायेगा।

अगले महीने इस समझौते को पास हुए 5 साल पूरे हो रहे हैं। मैं देश की जनता से यह पूछना चाहूंगा कि बिजली की समस्या में क्या कोई सुधार आया है। पांच साल बाद भी 30 करोड़ से अधिक लोग अंधेरे में बैठे हैं। एक बार फिर कांग्रेस द्वारा किया गया वायदा झूठा साबित हुआ है। इसके लिए कांग्रेस पार्टी को और इस समझौते के पक्ष में पाला बदल कर गई समाजावादी पार्टी और इसका समर्थन करने वाले दलों को अपना वायदा झूठा साबित हो जाने के लिए खेद व्यक्त करना चाहिए और देश से माफी मांगनी चाहिए।

बात सिर्फ मनमोहन सिंह सरकार की नहीं है, बल्कि कांग्रेस सरकारों की फितरत ही झूठे वायदे करने की रही है। इंदिरा जी ने 1970 के दशक में कहा था कि 'गरीबी हटाओ'। मैं पूछना चाहूंगा कि उस वायदे के 4 दशक बाद भी क्या गरीबी हट गई। आज 2013 में खाद्य सुरक्षा कानून के मसौदे में खुद कांग्रेस सरकार ये कह रही है कि उसे देश की दो-तिहाई जनता को खाद्य सुरक्षा देने की जरूरत है। यानि 40 साल के बाद भी देश के दो तिहाई लोग इतने गरीब हैं कि उनके हिस्से में भरपेट भोजन भी उपलब्ध नहीं है।

कहने का तात्पर्य यह है कि कांग्रेस की सरकारें हमेशा से वायदों के नाम पर सिर्फ छल करती है, ठोस काम नहीं। कांग्रेस के लम्बे शासनकाल में भारत, भारतीय और भारतीयता तीनों के साथ छल हुआ है। परन्तु हम देश की जनता को विश्वास दिलाना चाहते हैं कि यदि हमें 10 वर्ष तक शासन करने का मौका मिल जाय तो उसके बाद ऐसा शानदार भारत दिखाई पड़ेगा कि फिर न तो भारत के निर्माण की आवश्यकता रहेगी और न खाद्य सुरक्षा मुहैया कराने की आवश्यकता रहेगी और भारत का स्वाभिमान भी पूरे विश्वास के साथ विश्व के धरातल पर उभरता हुआ दिखेगा। जिसकी एक झलक हम वाजपेयी सरकार के समय देख चुके हैं।

भ्रष्टाचार को संरक्षण, कांग्रेस की फितरत

भ्रष्टाचार के विषय पर भी कांग्रेस का पूरा इतिहास भ्रष्टाचार को संरक्षण देने का रहा है। मैं मनमोहन सरकार से पहले स्वर्गीय नरसिंह राव और स्वर्गीय राजीव गांधी की सरकार के जगजाहिर भ्रष्टाचारों की बात नहीं कर रहा हूं बल्कि देश की जनता को याद दिलाना चाहता हूं कि भारत की आजादी के बाद 1950 के दशक में 'एप्पल बी' रिपोर्ट आई थी जिसके अनुसार भारत की गणना विश्व के सबसे ईमानदार देशों में थी। पंडित नेहरू इसका उल्लेख भी किया करते थे। परन्तु पंडित नेहरू के ही शासनकाल में पहले कृष्णा मेनन का जीप घोटाला आया। संसद की पीएसी की रिपोर्ट भी उनके खिलाफ थी फिर भी वे मंत्री बन गये। उसके बाद 1957 में मूंदड़ा कांड हुआ जिसके चलते तत्कालीन वित्त मंत्री टी.टी. कृष्णामाचारी ने त्यागपत्र दिया और बाद वे भी पुनः मंत्री बन गये। वहां से शुरू हुए सिलसिले ने आज उसी भारत को जो दुनिया के ईमानदार देशा में माना जाता था आज Transparancey International की रिपोर्ट के अनुसार दुनिया के सबसे भ्रष्ट देशों की गिनती में पहुंचा दिया। इस सूची में हम इस वर्ष नाईजीरिया जैसे देशों के समकक्ष हैं और पाकिस्तान जैसे देशों से भी पीछे हैं।

कहने का तात्पर्य यह है कि भ्रष्टाचार के साथ समझौते और संरक्षण की नींव कांग्रेस ने आजादी के बाद के पहले दशक में ही डाल दी थी और आज बढ़ते-बढ़ते उस विष बेल ने पूरे देश की व्यवस्था के सभी आयामों को इस कदर अपनी गिरफ्त में ले लिया है कि परिस्थिति बहुत विकराल हो गई है। आज प्रश्न एक सरकार के भ्रष्टाचार का नहीं रह गया है बल्कि प्रश्न भारत की संपूर्ण व्यवस्था की विश्वसनीयता का हो गया है। इस व्यवस्था में जनता का विश्वास पुनः स्थापित करने के लिए सिर्फ सरकार का ही बदलना काफी नहीं होगा बल्कि इस व्यवस्था में आमूलचूल बदलाव लाना होगा। एक नई राजनीति और नई व्यवस्था को जन्म देना होगा। भाजपा इस हेतु कृतसंकल्प भी है और हमारे पास उसकी दृष्टि, क्षमता और अनुभव तीनों हैं, यदि हमें सत्ता में आने का अवसर मिला तो हम यह प्रमाणित कर देंगे।

आर्थिक बदहाली

विद्वान अर्थशास्त्री प्रधानमंत्री के नेतृत्व में 9 साल पूरा करने के बाद आज जो देश की आर्थिक दशा है उसने सिर्फ दो काम किये हैं 1, एनडीए सरकार की शानदार आर्थिक व्यवस्था को ध्वस्त किया है और 2, पूरे देश में घनघोर आर्थिक विषमता बढ़ाई है।

एनडीए सरकार की विरासत को ध्वस्त करने के विषय में जो मैंने कहा है उसके लिए एक दो आंकडे ही काफी हैं –

2004 में जब हमने सरकार छोड़ी थी, तब विकास दर 8.4 प्रतिशत थी और महंगाई दर 3.77 प्रतिशत थी।

अभी 31 मई, 2013 को जारी Central Statistical Organisation (CSO) के आंकड़ों के अनुसार विकास दर पिछले एक दशक में सबसे निचले स्तर 5 प्रतिशत से भी नीचे आ गई है और मंहगाई पिछले दिनों कम होने के बावजूद 7–7.5 प्रतिशत तक है।

Central Statistical Organisation (CSO) के आंकड़े के अनुसार वर्ष 2012–2013 में अत्यंत महत्वपूर्ण कृषि एवं मैन्युफैक्चरिंग क्षेत्र में विकास की दर क्रमश: 1.9 प्रतिशत और 1 प्रतिशत के चिंताजनक स्तर पर आ गई है।

मैं जब यूपीए सरकार की गलत नीति की बात कर रहा हूं तो यह बात पूरी जिम्मेदारी के साथ कह रहा हूं। यूपीए सरकार ने सबसे बड़ी गलती यह की कि एनडीए सरकार के द्वारा जारी अनेक शानदार आधारभूत संरचना की परियोजनाओं (Infrastructure Projects) को धीमा कर दिया। इससे अर्थव्यवस्था की गति और रोजगार के सृजन पर बड़ा ही विपरीत प्रभाव पड़ा है।

हम सभी जानते हैं कि आज भारत का राजकोषीय घाटा (Fiscal Deficit) 4.8 प्रतिशत पर आ गया है और चालू खाता घाटा (Current Account Deficit) भी 6.7 प्रतिशत के खतरनाक स्तर पर आ गया है।

यूपीए सरकार इसके लिए अंतर्राष्ट्रीय परिस्थितियों को दोष देती है। यह सच है कि आज विश्व की कई अर्थव्यवस्थाओं को Fragile की संज्ञा दी गई है, अर्थात् वे नाजुक मानी जाती हैं। परन्तु मैं याद दिलाना चाहता हूं कि अटल जी की सरकार के समय में आर्थिक प्रतिबंध, कारगिल युद्ध और 2001 की मंदी के बावजूद हमने शानदार एवं लगातार वृद्धि का रिकार्ड बनाया था और इस प्रकार से भारत की इस प्रकार से भारत की अर्थव्यवस्था को 'Anti Fragile' यानी ''दबाव में बिखरने की बजाय निखरने वाला बनाया था।''

इसीलिए मैं कहता हूं कि आज इस पूरी दुर्गति के लिए केवल और केवल यूपीए सरकार की गलत नीतियां और भ्रष्टाचार ही उत्तरदायी है। मैं जब यूपीए सरकार की गलत नीति की बात कर रहा हूं तो यह बात पूरी जिम्मेदारी के साथ कह रहा हूं।

यूपीए सरकार ने सबसे बड़ी गलती यह की कि एनडीए सरकार के द्वारा जारी अनेक शानदार आधारभूत संरचना की परियोजनाओं (Infrastructure Projects) को धीमा कर दिया। इससे अर्थव्यवस्था की गति और रोजगार के सृजन पर बड़ा ही विपरीत प्रभाव पड़ा है।

जबकि यूपीए शासनकाल में कई लाख करोड़ रुपए के Infrastructure Project अटके पड़े हैं। सरकार चतवरमबजे ही नहीं बसमंत कर रही है। Infrastructure Companies dh Order Book में कमी है मगर उसके बावजूद वह पिछले कुछ सालों से 100 अरब अमरीकी डॉलर से ऊपर रहा करती थी। मगर यूपीए सरकार के शासन में Infrastructure Sector में ऐसी दुर्गति हुई है कि Infrastructure Companies की Total Order Book इस साल घट कर महज 50 अरब डॉलर ही रह गई है।

आप कह सकते हैं कि इन आंकड़ों से आम आदमी पर क्या प्रभाव पड़ता है तो मैं बताना चाहूंगा कि इन नीतियों से किस कदर बेरोजगारी बढ़ती है। जनवरी,, 2013 को 2013 को Wall Street Journal में में प्रकाशित McKinsey & Co. की रिपोर्ट के अनुसार यदि Infrastructure में GDP का 1 प्रतिशत निवेश किया जाय तो 34 लाख प्रत्यक्ष या परोक्ष रोजगार सृजित होते हैं। भारत अपने GDP केवल 4.7 प्रतिशत Infrastructure पर व्यय करता है जबकि इस क्षेत्र में हम से कहीं विकसित और कहीं बड़ी अर्थव्यवस्था वाला चीन GDP का 8.5 प्रतिशत Infrastructure पर व्यय करता है। अत: स्पष्ट है कि Infrastructure परियोजनाओं को धीमा करके केन्द्र परियोजनाओं को धीमा करके केन्द्र सरकार ने देश की अर्थव्यवस्था को कमजोर किया और करोड़ों नौजवानों से रोजगार के अवसर छीन लिए।

NSSO के अनुसार 1999 से 2004 के मध्य देश में 6 करोड़ 70 लाख रोजगार सृजित हुए जबकि 2004 से 2009 के बीच केवल 27 लाख।

दूसरी तरफ सभी भाजपा और एनडीए शासित राज्य सरकारों ने लगातार 10 प्रतिशत से भी अधिक की विकास दर बना कर रखी है, रोजगार के शानदार अवसर सृजित किए हैं, किसानों को 0 प्रतिशत ब्याज पर कृषि ऋण मुहैया कराया, कृषि विकास दर के नये रिकार्ड बनाये, 90 प्रतिशत से अधिक लोगों को खाद्य सुरक्षा मुहैया करायी और भारी मात्रा में

विदेशी निवेश को आकर्षित किया। साफ समझ में आता है कि कौन भारत के निर्माण में सहयोग दे रहा है और कौन विध्वंस में।

यदि भाजपा नेतृत्व की सरकार बनी तो हम वाजपेयी सरकार की तरह एक बार पुनः बड़े Infrastructure Projects शुरू करेंगे जिससे अर्थव्यवस्था को गति मिलेगी और रोजगार के और रोजगार के नये अवसर सृजित हो सकें।

आय की विषमता

यूपीए सरकार की गलत आर्थिक नीतियों ने संवेदनहीन अर्थव्यवस्था को जन्म दिया है। आर्थिक विषमता इस सीमा तक बढ़ी है कि 5 प्रतिशत लोगों का कुल Expenditure में हिस्सा 21.3 प्रतिशत। 20 प्रतिशत लोगों का आर्थिक स्तर बढ़ रहा है और 80 प्रतिशत लोग न सिर्फ वंचित हैं बल्कि उसमें से एक बड़ा तबका ऐसा है जिसका जीवन स्तर घट रहा है। करोड़पतियों की बढ़ती संख्या तभी तक प्रसन्नता का विषय हो सकती है जब गरीबी की रेखा के नीचे लोगों की तादाद भी तेजी से कम हो रही हो। परन्तु विडम्बना यह है कि गरीबी के स्तर को 32 और 26 रुपए प्रतिदिन के स्तर पर रखने के बावजूद देश में 30 प्रतिशत से अधिक लोग गरीबी की रेखा से नीचे हैं। आय की यह विषमता देश के लिए बहुत बड़ी चुनौती है। अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) ने भी अपनी रिपोर्ट में कहा है कि बढ़ती आर्थिक असमानता खतरनाक है और Civil unrest को जन्म दे सकती है।

विकास के सरकार के दावे आंकड़ों में कुछ भी कहते हों पर जनता की आंखों में खुशहाली दिखाई नहीं पड़ती। खुशहाली कभी भी आंकड़ों में नहीं बल्कि हमेशा आंखों में ही देखी जा सकती है। जब मैं खुशहाली की बात करता हूं तो यह सिर्फ एक शब्द नहीं है बल्कि देश के करोड़ों बेरोजगार और बेचैन नौजवानों के लिए नियमित रोजगार, निश्चित आमदनी और आत्मसम्मान एवं संतुष्टि का एक सम्मिलित स्वरूप है। मेरा मानना है कि यह केवल वास्तविक रोजगार सृजन के द्वारा ही हो सकता है केवल साल के कुछ दिन प्राप्त होने वाली अनुदान राशि के द्वारा नहीं।

कांग्रेस का अपना कोई आर्थिक दर्शन नहीं रहा है इसलिए कांग्रेस कभी नेहरू मॉडल में रूस के समाजवाद की नकल तो कभी नरसिंहराव और मनमोहन सिंह के मॉडल में अमरीका के पूंजीवाद और उपभोक्तावाद की नकल करती रही।

आज विश्व के आर्थिक परिदृश्य का यथार्थ यह है कि समाजवाद 20वीं सदी के आखिरी दशक में सोवियत संघ के विघटन के साथ ही विघटित हो चुका है, साम्यवाद के गढ़ चीन में भी वहां की सरकार ने स्वयं साम्यवाद को दफन किया है। क्योंकि आज के चीन की प्रगति सर्वहारा के आन्दोलन की वजह से नहीं बल्कि बहुराष्ट्रीय कंपनियों और अबाध पूंजीवाद के कारण हुई है। पूंजीवादी अर्थव्यवस्था जिसका कि केन्द्र आज अमेरिका है वह भी 21वीं सदी के शुरूआत से ही अमेरिकी अर्थव्यवस्था लगातार जिस तरह से लड़खड़ा रही है, उसे देख कर यह विश्वास नहीं होता कि 21वीं सदी में यही व्यवस्था विश्व को एक नई दिशा दे सकती है।

मेरा मानना है कि साम्यवाद दम तोड़ चुका है और पूंजीवाद का दम घुटना शुरू हो गया है। इन दोनों व्यवस्थाओं में सबसे बड़ी कमी यह रही कि ये समाज को शोषण से मुक्ति और सभी तबकों को उनका हक नहीं दिला सके। इसीलिये मैं यह मानता हूं कि आज अर्थव्यवस्था के एक वैकल्पिक मॉडल की जरूरत भारत को है। जो किसी की नकल नहीं हो बल्कि महात्मा गांधी के स्वदेशी और सर्वोदय पर आधारित हो। आप यह प्रश्न पूछ सकते हैं कि आज के युग में इसका व्यावहारिक स्वरूप क्या हो सकता है। एक उदाहरण से बताना चाहूंगा कि जिस प्रकार गुजरात के आनंद से शुरू हुए सहकारी आन्दोलन ने भारत को दुग्ध उत्पादन में नई ऊंचाईयां दी ठीक उसी प्रकार ब्लाक स्तर पर किसानों का सहकारी समितियां बना कर कृषि का व्यावसायिक उपयोग किया जाय तो हम भारत की सारी जनता को न केवल भूख से मुक्ति दे सकते हैं बल्कि विश्व की खाद्यान्न राजधानी भी बनने की क्षमता रखते हैं। विकास का कोई भी मॉडल तब तक बेमानी है जब तक कि उसका उजाला करोड़ों घरों ही नहीं बल्कि करोड़ों झोपड़ियों तक न पहुंच जाय।

देश का विकास तभी संभव हो सकता है जब इस खुशहाली पर सभी का हक हो और विकास ऐसा हो कि कोई भी तबका अपने को पिछड़ा न कह सके। देश की कई सामाजिक और राजनैतिक समस्याओं का समाधान इस स्थिति में स्वतः हो जायेगा। अतः यदि हमारी सरकार आयी तो विकास के लिए हमारा मूल मंत्र होगा–

''खुशहाली में हक हो सबका, पिछड़ा रहे न कोई तबका''।

नक्सली समस्या

भारत में आज आतंकवाद और नक्सलवाद जैसी समस्यायें सरकार की गलत नीतियों के कारण इतना विकराल रूप धारण करती चली गईं जहां एक तरफ आतंकवाद तुष्टिकरण की राजनीति और दृढ़ राजनैतिक इच्छाशक्ति के अभाव में बढ़ता चला गया वहीं नक्सलवाद सरकार की बहुआयामी विफलता के कारण बढ़ता चला गया।

जब तक एक समेकित योजना (Integrated

Approach) के साथ प्रयास नहीं होगा तब तक इस समस्या का स्थायी समाधान नहीं निकाला जा सकता। कानून व्यवस्था के पक्ष पर कांग्रेस शासन में जो लचर स्थिति है उससे सारा देश परिचित है। 66 वर्षों की आजादी में 56 साल तक शासन करने के बावजूद यदि प्राकृतिक संसाधनों से भरपूर देश के वे इलाके जो आज नक्सली प्रभाव में है यदि अविकसित रहे तो इसके लिए सीधे कांग्रेस की नीतियां ही उत्तरदायी हैं। सबसे बड़ी बात यह है कि सरकार की किसी भी खामी के विरूद्ध चरमपंथी विचाराधारा के द्वारा हिंसात्मक गतिविधियों से लड़ने में विश्वास रखने वाले लोगों को संरक्षण देकर वामदलों और कांग्रेस ने इस पक्ष पर भी बड़ी भारी गलती की है।

नक्सलवाद और आज के चरमपंथी माओवाद का भेद भी हमें समझना होगा। नक्सलवाद जहां 1967 में जमींदारों के विरूद्ध किसानों के एक आन्दोलन के रूप में शुरू हुआ था बाद में कुछ वामपंथी बुद्धिजीवियों ने नक्सलवाद को एक तरफ हिंसात्मक माओवाद की तरफ मोड़ा जो यह मानता है कि सत्ता बंदूक की नली से ही आती है। तो दूसरी तरफ नक्सलवाद की एक ऐसी रूमानी तस्वीर डालने की कोशिश की मानो अत: नक्सलवाद एक आदर्शवादी विचारधारा है जो गरीबों की सभी समस्याओं का समाधान कर देगी।

वास्तविकता यह है कि आज नक्सलवाद भारत के 16 राज्यों और 200 जिलों में फैल चुका है। भारत के 40 प्रतिशत हिस्से पर इसका प्रभाव है। अनुमान के अनुसार आज नक्सलियों के पास 18 हजार का कैडर तथा 20 हजार हथियार हैं। अनेक आतंकवादी संगठनों से भी उनके तार जुड़े हुए हैं। इन सबके प्रति सहानुभूति रखना राष्ट्र के लिए बेहद घातक है।

कांग्रेस ने नक्सलवाद को बौद्धिक संरक्षण देकर लोकतंत्र का और गरीबी आदिवासियों का भारी अहित भारी अहित किया है। दुर्भाग्य की बात है कि नक्सलवाद के कुछ प्रबल समर्थक राष्ट्रीय सलाहकार परिषद और योजना आयोग की कई प्रतिष्ठित समितियों के सदस्य बनाये गये। अपनी इस क्षमता का प्रयोग करके ये गये। उन्होंने भारत के गरीब तबकों के मन में भारत सरकार के संसाधनों के माध्यम से ही भारत की राज्यव्यवस्था के विरूद्ध विष बीज बोने का कार्य किया है।

कांग्रेस ने नक्सलवाद को बौद्धिक संरक्षण देकर लोकतंत्र का और गरीबी आदिवासियों का भारी अहित भारी अहित किया है। दुर्भाग्य की बात है कि नक्सलवाद के कुछ प्रबल समर्थक राष्ट्रीय सलाहकार परिषद और योजना आयोग की कई प्रतिष्ठित समितियों के सदस्य बनाये गये। अपनी इस क्षमता का प्रयोग करके ये गये। उन्होंने भारत के गरीब तबकों के मन में भारत सरकार के संसाधनों के माध्यम से ही भारत की राज्यव्यवस्था के विरूद्ध विष बीज बोने का कार्य किया है।

भाजपा आर्थिक विषमता और विकास में किसानों, मजदूरों और आदिवासियों के हक को जायज मानती है परन्तु यह लक्ष्य किसी वामपंथी विचारधारा से नहीं बल्कि आजादी से पूर्व ही स्वामी सहजानंद सरस्वती द्वारा प्रेरित किसान आन्दोलन और स्वर्गीय दतोपंत ठेंगड़ी द्वारा प्रेरित मजदूर आन्दोलन द्वारा स्थापित सिद्धांतों से ही प्राप्त किया जा सकता है।

खाद्य सुरक्षा

कांग्रेस आज यह आरोप लगा रही है कि देश की दो-तिहाई जनता को खाद्य सुरक्षा मुहैया कराने वाला कानून हमारी वजह से पास नहीं हो पाया। सर्वप्रथम तो यह गलती या यूं कहें कि कांग्रेस को यह अपराध स्वीकार करना होगा कि 50 साल से अधिक एकछत्र शासन करने के बावजूद भारत में आज भी दो-तिहाई लोग खाद्य सुरक्षा से वंचित हैं। जहां तक भाजपा का प्रश्न है जिन भी राज्यों में हमें लंबा कार्य करने का अवसर मिला, हमने नागरिकों को खाद्य सुरक्षा मुहैया करायी। उदाहरण के लिए छत्तीसगढ़ देश का पहला राज्य है जिसने खाद्य सुरक्षा कानून बनाया और दो -तिहाई ही नहीं 90 प्रतिशत जनता को खाद्य सुरक्षा मुहैया करायी है वह भी केन्द्र द्वारा प्रस्तावित कानून के प्रावधानों से अधिक सस्ते और पोषक खाद्यान्नों के द्वारा। इसके साथ ही साथ मध्य प्रदेश गुजरात और हमारी अनेक राज्य सरकारों ने गरीब जनता को खाद्यान्न मुहैया कराने में सराहनीय कार्य किये हैं।

भाजपा खाद्य सुरक्षा के विषय पर गंभीर है। अटलजी की सरकार के समय ही हमने अंन्त्योदय अन्न योजना बनाकर खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित कराने का प्रयास प्रारम्भ कर दिया था।

यूपीए सरकार द्वारा प्रस्तावित खाद्य सुरक्षा बिल में हमें अनेक आपत्तिजनक बातें दिखती हैं। जैसे इस बिल में खाद्यान्न के मुख्य उत्पादक किसानों विषय को कोई महत्व नहीं दिया गया है। किसानों की पूरी उपज को न्यूनतम समर्थन मूल्य प्राप्त होने की कोई गारंटी इसमें नहीं दी गई है। इसके अभाव में किसान औने-पौने दामों में अपनी फसल को बेचने पर मजबूर हो सकता है। इसे रोकने का कोई प्रावधान अवश्य होना चाहिये। सूखा या अकाल जैसी प्राकृतिक आपदा के समय किसानों के लिए इस संदर्भ में क्या नीति होगी यह स्पष्ट नहीं है। किसान में केन्द्र में रखे बगैर और उसे उसके द्वारा

उत्पादित खाद्यान्नों का उचित और लाभकारी मूल्य उपलब्ध कराये बगैर देश में खाद्यान्न सुरक्षा कैसे लायी जा सकती है, यह एक यक्ष प्रश्न है। इस विषय पर भी अलग से हम चर्चा करेंगे।

संवैधानिक संस्थाओं का दुरुपयोग

कोयला खदानों के आबंटन में हुई 1.86 लाख करोड़ की धांधली की जांच कर रही CBI को देश की सर्वोच्च अदालत ने अपनी Status Report सीधे कोर्ट में दाखिल करने का निर्देश दिया था। मगर यूपी.ए. सरकार ने ब्ठप् पर दबाव बनाकर न केवल कानून मंत्री और PMO के अधिकारियों के साथ रिपोर्ट साझा करने के लिए मजबूर किया बल्कि उसकी विषय-वस्तु (Content) में भी बदलाव किए गए। आज जब यह बात स्पष्ट हो चुकी है कि मूल रिपोर्ट में बदलाव किया गया था और इसके द्वारा स्पष्ट रूप से न्यायालय की अवमानना भी की गई थी। यदि सरकार न्यायालय की गरिमा में अपनी आस्था रखती है तो उसे अब कम से कम मूल रिपोर्ट सर्वोच्च न्यायालय में दाखिल करनी चाहिए।

यू.पी.ए. सरकार ने अपने शासनकाल में लगभग सभी संवैधानिक संस्थाओं और पदों का राजनीतिक दुरुपयोग करने में किसी प्रकार का संकोच नहीं किया है चाहे वह CBI जैसी जांच संस्था हो या गवर्नर जैसे संवैधानिक पद, कांग्रेस पार्टी ने राजनीतिक स्वार्थ की पूर्ति के लिए बिना विपक्ष को विश्वास में लिए मनमानी की है।

कहने के लिए तो सरकार ने विपक्ष को साथ लेकर चलने की बात तो कई बार कही है मगर जब करने की नौबत आती है तो सरकार विपक्ष की सुनने को तैयार नहीं होती। हाल ही में NHRC (National Human Right Commission) के अध्यक्ष पद को लेकर जब राज्यसभा और लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष की भूमिका निभा रहे श्री अरुण जेटली और श्रीमती सुषमा स्वराज ने लिखित रूप से अपनी असहमति जताई तो यह सरकार का फर्ज बनता था कि वह उनकी असहमति का सम्मान करे।

इससे पूर्व CVC और गवर्नर की नियुक्ति पर भी विपक्ष कई बार अपनी असहमति जता चुका है मगर यू.पी.ए. सरकार ने एक बार भी उसको अहमियत नहीं दी। लोकतंत्र में कांग्रेस पार्टी का रवैया हमेशा तानाशाही से भरा रहा है। विपक्ष को साथ लेकर चलने का न तो यू.पी.ए. सरकार के पास राजनीतिक अनुभव है और न ही वह कौशल जिसके बल पर टकराव से बचा जा सके।

तेलंगाना

आंध्र प्रदेश के तेलंगाना क्षेत्र में इस समय परिस्थितियां बहुत तनावपूर्ण हैं। लम्बे समय से तेलंगाना क्षेत्र को उसका उचित अधिकार नहीं मिला है। भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष के रूप में अपने पिछले कार्यकाल में भी मैंने 2006 में स्पष्ट रूप से यह घोषणा की थी कि हम तेलंगाना राज्य बनवायेंगे। एक बार पुनः मैं यह स्पष्ट करना चाहता हूं कि यदि अगले लोकसभा चुनाव में हमारी सरकार बनी तो हम तेलंगाना राज्य का निर्माण कर देंगे। ठीक उसी प्रकार जैसे 1998 में हमने अपने किये वायदे के अनुसार सत्ता में आने के बाद वर्ष 2000 में उत्तराखण्ड, झारखण्ड और छत्तीसगढ़ का निर्माण किया था।

पूर्वोत्तर

देश का पूर्वोत्तर इलाका आज अनेक चरमपंथी शक्तियों का अखाड़ा बना हुआ है। असम में बांग्लादेशी घुसपैठ ने विकराल रूप धारण कर लिया है। पूर्वोत्तर की विशिष्ट स्थिति को देखते हुए यहां की समस्याओं के समाधान के लिए एक अलग प्रभावी नीति बनाई जानी चाहिए। भाजपा यह मानती है कि पूर्वोत्तर में शिक्षित मानव संसाधन और प्रचुर मात्रा में उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों का प्रयोग करके इस क्षेत्र को विकास की एक नई दिशा दी जा सकती है।

पड़ोसी देशों के साथ संबंध और विदेश नीति

जब से यू.पी.ए. सरकार ने केन्द्र की सत्ता संभाली है भारतीय विदेश नीति दिशाहीनता का शिकार हो गई है। यू.पी.ए. सरकार की विदेश नीति इतनी लचर और निष्प्रभावी हो चुकी है कि चीन जैसे बड़े देश तो दूर मालदीव जैसे छोटे देश भी आज भारत की अनसुनी कर रहे हैं।

चीन

अप्रैल के महीने में जिस तरह चीनी सैनिकों ने जम्मू एवं कश्मीर में लद्दाख के दौलत बेग ओल्डी क्षेत्र में घुसपैठ को अंजाम दिया और कई दिनों तक अनाधिकृत कब्जा बनाए रखा वह इस बात का सूचक है कि यू.पी.ए. सरकार की कूटनीति और सुरक्षा (Diplomacy और Defence) दोनों ही पूरी तरह विफल हो गई।

पहले तो यू.पी.ए. सरकार ने इसे एक छोटी-मोटी मामूली घटना की तरह प्रस्तुत किया। पर चीनी सैनिकों के पीछे हटने के बाद यू.पी.ए. सरकार ने उसे अपनी कूटनीतिक विजय के तौर पर प्रस्तुत किया। यद्यपि पत्र-पत्रिकाओं में गुपचुप तरीके से चीन के साथ यू.पी.ए. सरकर के किसी समझौते कि आशंकाएं जताई जा रही हैं। क्या जम्मू एवं कश्मीर में LAC से सटे इलाके चुमार घाटी में भारत ने अपने ही सैनिकों के लिए बनाए बंकरों को नष्ट नहीं किये हैं? क्या भारत की सीमा में रह रहे चरवाहों को अपने ही इलाकों में मवेशियों को चराने से रोका नहीं जा रहा है?

चीन लगातार जम्मू एवं कश्मीर से सटे PoK के गिलगित बलचिस्तान में मौजूद हैं। चीन को भारत के साथ द्विपक्षीय संबंधों को बेहतर बनाने के लिए पाक अधिकृत कश्मीर से अपनी सेनायें हटानी चाहिये। यू.पी.ए. सरकर ने इस पूरे मामले में चुप्पी साध रखी है। जबकि भारत की संसद में हाल ही में हमने प्रस्ताव पारित करके PoK को भी भारत का अभिन्न हिस्सा माना है।

भारत और चीन की सुरक्षा स्थिति में भारी अंतर है। हमारा रक्षा बजट जहां 36 अरब अमेरिकी डालर है तो चीन का रक्षा बजट 112 अरब अमेरिकी डालर है। चीन ने जिस प्रकार से साइबर वार में आक्रामकता और अंतरिक्ष में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है ये बातें ध्यान देने योग्य हैं। तिब्बत क्षेत्र का सैन्यीकरण, वहां पर 58 हजार कि.मी. का सड़क नेटवर्क, रेल सम्पर्क, 5 एयरबेस और न्यूक्लियर मिसाइल बेस होने की अनदेखी नहीं की जा सकती। इतना ही नहीं वियतनाम से लगे दक्षिणी चीन सागर क्षेत्र में चीन द्वारा जिस प्रकार का दबाव बनाया जा रहा है वह भारत की सीमाओं पर ही नहीं बल्कि एशिया प्रशांत क्षेत्र तक के सामरिक संतुलन को बदलने की चीन की मंशा को दर्शाता है।

चीन लगातार जम्मू एवं कश्मीर से सटे PoK के गिलगित बलचिस्तान में मौजूद हैं। चीन को भारत के साथ द्विपक्षीय संबंधों को बेहतर बनाने के लिए पाक अधिकृत कश्मीर से अपनी सेनायें हटानी चाहिये। यू.पी.ए. सरकर ने इस पूरे मामले में चुप्पी साध रखी है। जबकि भारत की संसद में हाल ही में हमने प्रस्ताव पारित करके PoK को भी भारत का अभिन्न हिस्सा माना है।

हमारा यह मानना है कि यूपीए के शासनकाल में चीन के सन्दर्भ में भारत के सामरिक और व्यावसायिक हितों के साथ निरंतर समझौता किया जा रहा है।

तिब्बत में मानवाधिकारों का हनन

चीन द्वारा पिछले कुछ महीनों में तिब्बत में दमन चक्र चलाया गया है जिसके कारण वहां सैकड़ों की संख्या में बौद्ध भिक्षुओं ने आत्मदाह किया है। चूंकि तिब्बत भारत की सीमा से सटा इलाका ही नहीं है बल्कि आज दुनिया में उस बौद्ध धर्म का सबसे बड़ा केन्द्र है जिसका भारतीय संस्कृति में एक अत्यंत श्रेष्ठ स्थान है इसलिए बौद्ध भिक्षुओं के साथ हो रही किसी भी प्रकार की मानवी त्रासदी के प्रति भारत असंवेदनशील नहीं रह सकता।

पाकिस्तान

भाजपा पाकिस्तान में हुए आम चुनावों में श्री नवाज शरीफ की पार्टी की विजय का स्वागत करती है। पाकिस्तान में लोकतंत्र मजबूत होने से दक्षिण एशिया क्षेत्र में हालात बेहतर होने की संभावनाएं बढ़ेंगी। नवनियुक्त प्रधानमंत्री श्री नवाज शरीफ ने भारत के प्रति काफी संजीदगी दिखाई है।

श्री नवाज शरीफ की इस कोशिश का भाजपा ने स्वागत किया है मगर हम उनके बयान का सतर्कता के साथ स्वागत करते हैं। सतर्कता शब्द इसलिए क्योंकि जो भारत-पाकिस्तान संबंधों का इतिहास रहा है वह इतना उलझ गया है कि उसे सुलझाने में सिर्फ लफ्जों की ही नहीं फैसलों की भी दरकार होगी। पाकिस्तान की नई सरकार यह सुनिश्चित करे कि अमन की उसकी कोशिश को कही पाकिस्तान की सरजमीं पर सक्रिय चरमपंथी नाकाम न होने दें।

अभी हाल ही में भारत के गृहमंत्री ने यह बयान दिया है कि पाकिस्तान की गुप्तचर एजेंसी आई.एसआई. सिक्ख युवकों को भरमा कर एक बार पुन: आतंकवाद की तरफ मोड़ने का प्रयास कर रही है। यदि पाकिस्तान भारत के साथ अच्छे संबंध बनाना चाहता है तो वहां की सरकार को ऐसी गतिविधियों को भी नियंत्रण में रखना होगा।

इसी के साथ पाकिस्तान द्वारा चीन को ग्वादर का नौसैनिक अड्डे का प्रशासनिक नियंत्रण सौंपना, चीन की मदद से दो नये न्यूक्लियर रिएक्टर स्थापित करना और अपनी आणविक और मिसाइल क्षमता में तेजी से बढ़ोत्तरी करना एक ऐसा पक्ष है जो मन में बहुत सी आशंकाओं को जन्म देता है। पाकिस्तान की नई सरकार को इन आशंकाओं का भी निराकरण करना होगा।

पाकिस्तान में वहां के अल्पसंख्यक हिन्दुओं और सिक्खों के साथ हो रहे अमानवीय अत्याचारों को भारत सरकार को नजरअन्दाज नहीं करना चाहिए। पाकिस्तान से जो हिन्दू और सिक्ख शरणार्थी बन कर आये हैं उन्हें दीर्घ अवधि का वीज़ा दिया जाना चाहिए और यदि वे नागरिकता चाहें तो उस पर भी सरकार को सकारात्मक सहानुभूति के साथ विचार करना चाहिए। मुझे दुख है कि देश में करोड़ों हिए बांग्लादेशी घुसपैठियों को बाहर निकालना तो दूर उन्हें यहां बसा कर वोट बैंक में तब्दील करने में लगी कांग्रेस सरकार पाकिस्तानी हिन्दुओं और सिक्खों के वीज़ा की अवधि बढ़ाने में भी कोताही बरतती है।

अफगानिस्तान

2014 में नॉटो सेनाएं अफगानिस्तान से हट जाएंगी उसके

बाद की परिस्थिति को लेकर भाजपा विशेष रूप से चिंतित है। यू.पी.ए. सरकार को अफगानिस्तान के पुनर्निमाण में सहयोग करने की नीति के साथ-साथ 2014 के बाद संभावित सामरिक परिदृश्य (Security Scenario) को लेकर उसे एक प्रभावी रणनीति बनानी प्रभावी रणनीति बनानी चाहिए।

परम्परागत रूप से भारतीय उपमहाद्वीप में शान्ति तभी रही है जब काबुल और कन्धार के सीमावर्ती इलाकों में अपेक्षाकृत शान्ति रही है। इसलिए शान्त और स्थिर अफगानिस्तान भारत की सामरिक रणनीति में एक अहम जरूरत है।

नेपाल

नेपाल के साथ भारत के संबंधों में हाल के वर्षों में कई ऐसे मुद्दे सामने आए है जिसके कारण दोनों देशों के बीच मत भिन्नता पैदा हुई है। नेपाल हाल के वर्षों में आतंकवादी संगठनों के लिए भारत में घुसपैठ का ठिकाना बन गया है, नेपाल भारत में नकली मुद्रा भेजने का Transit point बन गया है। हथियारों और नशीले पदार्थो की भी तस्करी नेपाल के रास्ते भारत में हो रही है। भारत और नेपाल की सरकारों को इस ओर ध्यान देना चाहिए।

नेपाल में संवैधानिक सक्रमण का काल चल रहा है। भाजपा की यह इच्छा है कि नेपाल के सभी राजनीतिक दल मिलकर संवैधानिक संकट का समाधान करें और नेपाल में संवैधानिक लोकतंत्र की व्यवस्था के अनुसार एक स्थाई सरकार बन सके जो भारत के साथ उसी प्रकार के बेहतरीन और विश्वासपूर्ण संबंधों को बढ़ा सके जैसे कि हमारे बीच शताब्दियों से रहे है।

श्रीलंका

पड़ोसी देश श्रीलंका के संविधान में 13वें संशोधन द्वारा प्रदत्त 'Devolution of power' के सिद्धान्त पर भ्रम की स्थिति बनी हुई है। श्रीलंका की मौजूदा सरकार ने इस दिशा में कदम बढ़ाने से पहले ही खींच लिए हैं।

चूंकि श्रीलंका तमिल और सिंहली भाषी जनता के बीच कोई Structured dialogue की व्यवस्था नहीं है और वहां तमिलों का निरंतर उत्पीड़न हुआ है। इसलिए पड़ोसी देश के नाते यू.पी.ए. सरकार को श्रीलंका सरकार पर दबाव बनाना चाहिए कि वह श्रीलंका में तमिल समस्या के स्थायी और शान्तिपूर्ण निदान की दिशा में सार्थक कदम उठाए।

म्यांमार

हाल ही में म्यांमार में साम्प्रदायिक तनाव ने जोर पकड़ लिया है जिसके कारण बौद्ध और मुस्लिम वर्ग के बीच हिंसक झड़पें बढ़ गई हैं। हिंसा के इस माहौल ने म्यांमार में परिवर्तन की आहट और सुखद अनुभूति को कम किया है।

यदि म्यांमार में शान्ति और स्थिरता आती है तो भारत के पूर्वोत्तर राज्यों के लिए यह एक शुभ संकेत होगा और भारत और म्यांमार के बीच विकास की नई संभावनाओं के द्वार खुलेंगे।

जहां एक तरफ कांग्रेस नेतृत्व की यूपीए सरकार ने अर्थनीति से लेकर विदेश नीति तक सभी क्षेत्रों में भारत की प्रतिष्ठा को धूमिल किया है वहीं दूसरी तरफ भाजपा ने अपने शासित प्रदेशों में सुशासन और विकास के कीर्तिमान बनाए हैं।

भाजपा सरकारों का सुशासन और विकास

भाजपा का सुशासन और विकास के प्रति प्रतिबद्धता (Commitment) जग जाहिर है। भाजपा इस देश का एकमात्र राजनीतिक दल है जिसने जहां भी सत्ता मिली है वहां सुशासन स्थापित किया है और विकास की गति को भी बढ़ाया है। भाजपा का विकास का एजेण्डा सिर्फ चुनिन्दा लोगों के हितों से नहीं जुड़ा है बल्कि उसकी परिधि में समाज के अन्तिम छोर पर खड़ा गरीब इंसान भी आता है। हमारी राज्य सरकारें इस बात की गवाह है।

गुजरात

गुजरात का विकास का क्या मॉडल है और कैसा उसका प्रदर्शन रहा है इससे आप सभी लोग भली भांति परिचित है। गुजरात की जनता ने भाजपा और वहां के मुख्यमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व और विकास के प्रति उनकी प्रतिबद्धता पर मुहर लगा रखी है। हाल के उप-चुनावों में भाजपा की विजय इसका ताजा उदाहरण है। गुजरात के विकास की चर्चा तो राष्ट्रीय ही नहीं बल्कि अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर भी हो रही है।

मध्य प्रदेश

मुझे प्रसन्नता है कि आज मध्य प्रदेश पूरे भारत में सबसे तेज गति से विकास करने वाला 'विकास दर में नम्बर वन राज्य बन गया है। मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह के नेतृत्व में सरकार ने कृषि के क्षेत्र में अभूतपूर्व कीर्तिमान स्थापित किए है। आजकल मध्य प्रदेश सरकार ने 'अटल ज्योति योजना' के माध्यम से पूरे प्रदेश के हर गांव को 24 घंटे बिजली देने का संकल्प उठाया हुआ है।

- मुझे विश्वास है कि गुजरात की तरह मध्य प्रदेश भी जल्द ही 24 घण्टे बिजली मुहैया कराने वाला राज्य बन जाएगा।

छत्तीसगढ़

पिछले साढ़े नौ वर्षो से छत्तीसगढ़ में भाजपा का शासन है। मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह के नेतृत्व में छत्तीसगढ़ में विकास और स्थिरता आई है। छत्तीसगढ़ में जो खाद्य सुरक्षा कानून

बना है उसकी सफलता ने कांग्रेस को भी मजबूर कर दिया है कि वह राष्ट्रीय स्तर पर एक ऐसा ही 'खाद्य सुरक्षा कानून' बनाए।

गोवा

पिछले साल गोवा में हुए विधानसभा चुनावों में प्रदेश की जनता ने कांग्रेस के भ्रष्टाचार से तंग आकर सत्ता भाजपा को सौंपी। सत्ता पाने के एक वर्ष के भीतर ही श्री मनोहर पर्रीकर के नेतृत्व वाली भाजपा सरकर ने जनता को न केवल राहत दी बल्कि गोवा को ऐसे राज्य का दर्जा भी दिला दिया जहां पेट्रोल, डीजल से सस्ता बिकता है। श्री मनोहर पर्रीकर की क्षमता और पारदर्शिता के किस्से गोवा की हर गली और नुक्कड़ पर सुनने को मिलते हैं।

आगामी विधानसभा चुनाव

इस साल नवम्बर में कई राज्यों के विधानसभा चुनाव होने है जिनमें दो राज्यों मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ में हमारी सरकार है और राजस्थान तथा दिल्ली में इस समय कांग्रेस का शासन है। मुझे विश्वास है कि चारों ही राज्यों में भाजपा की इकाईयां चुनाव की दृष्टि से कटिबद्ध हो चुकी होंगी। जहां हमारी सरकारें है वहां संगठन सरकार की उपलब्धियों को जनता के बीच ले जाए, जहां हम विपक्ष में है वहां तो जनता में हमें वह विश्वास जगाना होगा कि भाजपा का प्रदर्शन उनके प्रदेश में भी कांग्रेस से कई गुना बेहतर साबित होगा।

मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ में भाजपा की जीत की हैट्रिक लगे ऐसी शुभकामनाएं हम सबकी है। जबकि राजस्थान और दिल्ली में भाजपा की विजय पताका फहरेगी इस विश्वास के साथ हमें आगे बढ़ना है।

इस साल नवम्बर में कई राज्यों के विधानसभा चुनाव होने है जिनमें दो राज्यों मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ में हमारी सरकार है और राजस्थान तथा दिल्ली में इस समय कांग्रेस का शासन है। मुझे विश्वास है कि चारों ही राज्यों में भाजपा की इकाईयां चुनाव की दृष्टि से कटिबद्ध हो चुकी होंगी। जहां हमारी सरकारें है वहां संगठन सरकार की उपलब्धियों को जनता के बीच ले जाए, जहां हम विपक्ष में है वहां तो जनता में हमें वह विश्वास जगाना होगा कि भाजपा का प्रदर्शन उनके प्रदेश में भी कांग्रेस से कई गुना बेहतर साबित होगा।

राजस्थान और दिल्ली दोनों ही जगह कई कार्यक्रमों में जाने का मुझे हाल ही में अवसर प्राप्त हुआ है और दोनों ही जगह लोग कांग्रेस से छुटकारा चाहते है।

राजस्थान में तो राजनीतिक परिदृश्य लगातार साफ होता जा रहा है और श्रीमती वसुंधरा राजे के नेतृत्व में 'सुराज संकल्प यात्रा' का शंखनाद पूरे प्रदेश में गूंज रहा है।

दिल्ली को लेकर भी हमें बहुत आशाएं हैं। भले ही दिल्ली को 'पूर्ण राज्य' का दर्जा नहीं हासिल हो मगर यहां होने वाले विधानसभा चुनावों का राष्ट्रीय स्तर पर काफी सांकेतिक महत्व है। इसलिए दिल्ली विधानसभा चुनाव को जीतना हमारे लिए बेहद आवश्यक है। दिल्ली में हम 14 साल से अधिक का वनवास काट चुके हैं। मुझे विश्वास है कि दिल्ली के सभी कार्यकर्ताओं के सम्मिलित प्रयास से इस वर्ष दिल्ली की सत्ता में हमारी वापसी होगी।

बूथ प्रबंधन एवं बूथ कमेटियां

इस साल सिर्फ विधानसभा चुनावों की ही नहीं हमें लोकसभा चुनावों की भी तैयारी करनी है। चुनावी प्रबंधन की दृष्टि से हर राज्य में Booth Committees के गठन का काम पूरा किया जाना चाहिए। यदि सभी राज्यों में Booth Committees गठित करके सक्रिय कर दी गई तो चुनावों में भाजपा की जीत सुनिश्चित है।

- पूरे देश में Booth Committees के गठन का काम तेजी से हो इसके लिए केन्द्रीय स्तर पर एक Central Booth Management Committee का गठन किया जाएगा जो सभी Booth Committees का रिकार्ड और संचालन की देख-रेख करेंगे।
- Booth Management के काम में आधुनिक टेक्नोलाजी के साथ-साथ पारम्परिक तरीके भी प्रयोग में लाए जाने चाहिए।
- राष्ट्रीय कार्यसमिति की इस बैठक के समापन के बाद से ही सभी पदाधिकारी इस कार्य की नियमित समीक्षा बैठक करके इस कार्य को सफलतापूर्वक परिणाम तक पहुंचाएंगे, ऐसा मेरा विश्वास है।
- बूथ कमेटी के कार्यकर्ताओं के साथ प्रदेश और देश के नेताओं का निरन्तर संपर्क बना रहे इस दिशा में प्रयास किया जाना चाहिए।

सिनेमा के सौ वर्ष

गोवा में प्रतिवर्ष भारत का अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव होता है। भारतीय फिल्म महोत्सव के लिए गोवा को स्थायी केन्द्र बनाने का निर्णय एन.डी.ए. सरकार ने किया था। अत: गोवा में हम बैठे और भारतीय सिनेमा का प्रसंग न आये तो बात अधूरी सी लगती है, विशेषकर तब जबकि 2013 का यह वर्ष भारतीय सिनेमा का शताब्दी वर्ष है। 1913 में ही

दादा साहब फाल्के ने ''राजा हरिशचन्द्र'' के रूप में भारत की पहली फीचर फिल्म बनाई थी। हम सब इस अवसर पर दादा साहेब फाल्के के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करते हैं।

सिनेमा का भारत के जनमानस और विशेषकर युवाओं पर बड़ा व्यापक प्रभाव रहा है। भारतीय फिल्मकारों और कलाकारों ने राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर अपना अभूतपूर्व योगदान दिया है। भूमंडलीकरण के इस दौर में सिनेमा भारत की वैश्विक पहचान बन कर उभरा है। परन्तु मैं भारतीय सिनेमा के इस शताब्दी वर्ष पर फिल्म जगत से जुड़ी हस्तियों से यह भी अनुरोध करना चाहूंगा कि समाज पर अपने व्यापक प्रभाव को देखते हुए समाज में आज गिरते हुए मूल्यों को पुन: स्थापित करने में अपनी अग्रणी भूमिका निभाए।

युवा

भारत विश्व का सबसे युवा देश है जो 21वीं सदी में भारत को विश्व के शिखर पर देखना चाहता है। आज देश के युवा के मन की यह ललक जिन प्रतीकों में परिलक्षित होती है उसे यदि दो शब्दों में कहा जाए तो वो हैं ग्लोबलाइजेशन और सोशल मीडिया। सोशल मीडिया स्वयं आज ग्लोबलाइजेशन का सबसे बड़ा वाहक बन गया है। सोशल मीडिया का महत्व आज सामाजिक और राष्ट्रीय सीमाओं से परे जा चुका है। इसका उपयुक्त प्रयोग और उसके द्वारा युवाओं को कैसे जोड़ा जाए, इस विषय पर इस कार्यसमिति में अलग से विचार रखे जायेंगे।

महिला

देश में आज नारी शक्ति निरंतर प्रगति करती हुई समाज में अपना असली मुकाम पाने के लिए प्रयत्नशील है। भाजपा ने सदैव महिला सशक्तिकरण में एक प्रभावी भूमिका निभाई। महिलाओं को संगठन में एक तिहाई आरक्षण देने वाले हम भारत के एकमात्र राजनैतिक दल हैं।

पिछले दिनों महिलाओं के प्रति अमानवीय .त्यों की कई घटनायें सामने आई हैं। इसका समाधान सिर्फ कानूनों से नहीं बल्कि व्यक्तियों की मानसिकता और सामाजिक व्यवस्था में बदलाव के साथ ही संभव हो पाएगा। भाजपा इस पक्ष को भी अपने राजनैतिक अभियानों में समाहित करने का प्रयास करेगी।

डॉ0 मुखर्जी के बलिदान के 60 वर्ष

एक अन्य विषय का मैं उल्लेख अवश्य करना चाहूंगा कि हमारे संस्थापक श्यामा प्रसाद मुखर्जी जिन्होंने भारत की एकता और अखण्डता के लिए अपना जीवन बलिदान किया। आगामी 23 जून को उनके बलिदान के 60 वर्ष पूरे हो रहे हैं। हम इस अवसर पर डा0 मुखर्जी के उस उददेश्य के लिए सदैव तत्पर रहने का संकल्प करते हैं। जो भारत की अखण्डता के लिए समर्पित था।

आह्वान

भाजपा की दृष्टि से पिछले दिनों के कुछ समाचार सुखद नहीं रहे। कर्नाटक के चुनावों में हमें अपेक्षा से काफी कम सफलता प्राप्त हुई। इस पराजय पर आत्म-मंथन करके निश्चित रूप से हम अगले चुनावों के लिए पुन: प्रयास करेंगे।

वैसे हमारे कांग्रेस के मित्र आज यह प्रचार कर रहे हैं कि उत्तराखण्ड, हिमाचल और कर्नाटक में हमारी पराजय के बाद वे लोकसभा में विजय की ओर प्रस्थान कर रहे हैं।

मैं विनम्रतापूर्वक इन तीनों राज्यों में अपनी पराजय को स्वीकार करता हूं। परन्तु हम सब कार्यकर्ताओं के लिए इस संदर्भ में, मैं दुनिया के इतिहास की एक बहुत विख्यात घटना याद दिलाना चाहता हूं।

द्वितीय विश्व युद्ध की शुरूआत में जर्मनी ने पोलैंड, आस्ट्रिया और फ्रांस को बहुत आसानी से हरा दिया था और 10 जून, 1940 को फ्रांस ने भी आत्मसमर्पण कर दिया था। जर्मन फौजें इन विजयों के आत्मविश्वास से भर कर अब ब्रिटेन पर विजय की तैयारी कर रही थीं। तब विंसटन चर्चिल ने 18 जून, 1940 को एक ऐतिहासिक भाषण दिया था जिसमें उन्होंने उस विपरीत परिस्थिति में भी आत्मविश्वास से भर कर ब्रिटेन का आह्वान करते हुए कहा था कि हमें इन लगातार पराजयों के बाद भी अंतिम और निर्णायक विजय हमें ही प्राप्त करके दिखाना है ताकि यदि ब्रिटिश कॉमनवेल्थ एक हजार साल तक भी चले तो भी इस समय के लिए कहा जाय कि यह बुरा वक्त नहीं था बल्कि "This was their finest hour". युद्ध का अंतिम परिणाम क्या रहा यह सारे विश्व को पता है।

मैं आज अपने भाजपा कार्यकर्ताओं को यह विश्वास दिलाना चाहता हूं कि उत्तराखण्ड और हिमाचल में संयोगवश और कर्नाटक में परिस्थितिवश हमारी पराजय भले ही हुई हो परंतु अंतिम और निर्णायक विजय हमारी ही होगी।

इस विजय को इतने शानदार तरीके से प्राप्त करके दिखाना है कि भविष्य में जब भी भारत का इतिहास लिखा जाय तो भाजपा की आज की परिस्थिति के लिए चर्चिल का वही चर्चित वाक्य दोहराया " This was their finest hour".

अंत में मैं आह्वान करना चाहूंगा कि अब हम सबको लोकतंत्र के आगामी महासमर में अंतिम और निर्णायक विजय अपने पक्ष में करने के लिए उठ खड़े होना है। ■

भारत की सुरक्षा के साथ किसी भी तरह का समझौता बर्दाश्त नहीं

भाजपा राष्ट्रीय कार्यकारिणी बैठक में पार्टी के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. मुरली मनोहर जोशी ने सुरक्षा और स्वाभिमान विषय पर प्रस्ताव प्रस्तुत किया, जिसका अनुमोदन छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह ने किया। यह प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित हुआ। इस प्रस्ताव में देश की आतंरिक और बाह्य सुरक्षा की स्थिति पर चिंता प्रकट की गई है। इसमें कहा गया है कि माओवादी हिंसा की बढ़ती घटनाएं, आतंकवाद तथा चीन व पाकिस्तान से लगी अंतरराष्ट्रीय सीमाओं पर हो रही घटनाएं एक व्यापक चिंता की ओर संकेत कर रही हैं। हम यहां इस प्रस्ताव का पूरा पाठ प्रकाशित कर रहे हैं :

वर्तमान परिदृश्य में देश की आतंरिक और बाह्य सुरक्षा गंभीर खतरों में है। माओवादी हिंसा की बढ़ती घटनाएं, आतंकवाद तथा चीन व पाकिस्तान से लगी अंतरराष्ट्रीय सीमाओं पर हो रही घटनाएं एक व्यापक चिंता की ओर संकेत कर रही हैं। आतंरिक सुरक्षा की स्थिति पहले कभी इतनी बिगड़ी हुई और चिंताजनक नहीं रही तथा पड़ोसी देशों के साथ भी हमारे संबंध इतने नाजुक स्थिति में कभी नहीं पहुंचे थे।

कांग्रेस के नेतृत्व वाली संप्रग-2 सरकार हमारी आतंरिक तथा बाह्य सुरक्षा को बड़े ही खतरनाक परिस्थिति में धकेल कर अपना कार्यकाल पूरी कर रही है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हमारा कद और प्रतिष्ठा बुरी तरह क्षीण हो गई है। जहां दक्षिण में हमारे मछुआरों को समुद्र में पकड़ कर मारा जा रहा है, वहीं उत्तरी सीमाओं पर हमारे सैनिकों का सिर कलम कर नृशंस हत्याएं की जा रही है और चीन के द्वारा हमारे इलाकों मे अनेकों बार मनमर्जी से हमारी सीमाओं का उल्लंघन किया जा रहा है। ताजा घटना चीनी सैनिकों द्वारा घुसपैठ कर भारतीय सीमा में 19 किलोमीटर अंदर घुसने और लगभग 19 दिन तक वहां जमे रहने की है। भारत का अपमान हो रहा है, इसका महत्व घट रहा है और इसके वैध प्राधिकार पर सवाल उठाये जा रहे हैं। और इतना सब हो जाने के बाद भी केन्द्र में बैठी सरकार जनता के समक्ष बस अपनी लाचारी ही प्रस्तुत कर पा रही है।

कांग्रेस के नेतृत्व वाली संप्रग-2 सरकार हमारी आतंरिक तथा बाह्य सुरक्षा को बड़े ही खतरनाक परिस्थिति में धकेल कर अपना कार्यकाल पूरी कर रही है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हमारा कद और प्रतिष्ठा बुरी तरह क्षीण हो गई है। जहां दक्षिण में हमारे मछुआरों को समुद्र में पकड़ कर मारा जा रहा है, वहीं उत्तरी सीमाओं पर हमारे सैनिकों का सिर कलम कर नृशंस हत्याएं की जा रही है और चीन के द्वारा हमारे इलाकों मे अनेकों बार मनमर्जी से हमारी सीमाओं का उल्लंघन किया जा रहा है।

राष्ट्रीय सुरक्षा को खतरा

कुछ वर्षो पहले हुए दंतेवाड़ा में सीआरपीएफ के 76 जवानों की नृशंस हत्या के तर्ज पर 25 मई, 2013 को छत्तीसगढ़ में कांग्रेस नेताओं के काफिले पर माओवादियों द्वारा किये गये बर्बर हमले की भारतीय जनता पार्टी निंदा करती है। इस ताजा हमले के जरिये माओवादियों ने देश के विरूद्ध युद्ध का ऐलान कर दिया है। यह लोकतंत्र पर भी सीधा हमला है। माओवादी चुनाव में नहीं बन्दूक पर विश्वास करते हैं। लोकतंत्र के माध्यम से चुनी हुई सरकार को हिंसा के द्वारा वह हटाना चाहते हैं।

इस ताजा हमले से नक्सलवादियों के नयी रणनीति का खुलासा होता है। इस रणनीति के तहत सुरक्षा बलों के साथ मुठभेड़ करना, राजनीतिक नेतृत्व को निशाना बनाना, सरकारी अधिकारियों का अपहरण करना, स्थानीय निर्वाचित प्रतिनिधियों को धमकाना और जनता से धन उगाही करना यह इस का रूप है। इसी रणनीति के तहत एक प्रशासनिक अधिकारी

को अगवा करके छोड़ते समय उसके गले में तख्ती लगाई गई जिसमें लिखा था कि वह ''युद्धकैदी'' है।

देश की आंतरिक सुरक्षा को सबसे बड़ा खतरा माओवाद से है। प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने पहले एक मौके पर नक्सलवाद को भारत के लिए सबसे बड़ा खतरा करार दिया था लेकिन सरकार की कथनी और करनी में बहुत फर्क रहा। जहॉ एक तरफ नक्सलवाद से निपटने में कांग्रेस की नीतियों में विसंगति दिखती हैं वही दूसरी तरफ चुनावों में माओवादियों के साथ उसकी सांझेदारी समय समय पर खुल कर सामने आ गयी है। ऐसी खबरें आंध्र प्रदेश और छत्तीसगढ़ से निकलकर आयी हैं।

कांग्रेस पार्टी अंशकालिक राजनीतिक फायदे के चलते नक्सलवाद से लड़ाई के राष्ट्रीय संकल्प के साथ समझौता कर रही है। एक ओर तो प्रधानमंत्री ऐलान करते हैं कि वामपंथी अतिवाद देश के लिए सबसे बड़ा खतरा है लेकिन वहीं दूसरी ओर वह अपने वक्तव्य के अनुसार राजनीतिक संकल्प या कार्रवाई नहीं करते है।

25 मई, 2013 को बस्तर हमले के बाद कांग्रेस ने राज्य सरकार पर निशाना साधकर दोषारोपण का खेल शुरु कर दिया। हालांकि, राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) से आ रही प्रारंभिक खबरें संदेह की सुई स्वयं कुछ कांग्रेसी नेताओं पर केन्द्रित करती है जोकि उसी काफिले जिस पर हमला हुआ उस में शामिल रहते हुए, माओवादियों से संपर्क रखे हुए थे। कांग्रेस को इस घटना पर स्पष्टीकरण देना चाहिए।

कांग्रेस पार्टी और केंद्र सरकार, 2004 सें सत्ता में आने के बाद तथा दंतेवाड़ा में सीआरपीएफ के 76 जवानों के नरसंहार कांड से पहले, नक्सलवादियों/माओवादियों से निपटने के संबंध में राज्यों को भाषण देते रहे हैं। प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने 2005 में नक्सल समस्या के विस्तार पर चिंता जताते हुए देश के कुछ हिस्सों में कानून और व्यवस्था के लगभग ठप हो जाने की बात कही।

2005 में 13 राज्यों में 156 जिले इस समस्या से विभिन्न स्तर पर प्रभावित थे। मीडिया खबरों के अनुसार माओवाद अब 15 राज्यों के 182 जिलों में फैल चुका है। भारत के योजना आयोग का तो कहना है कि वामपंथी अतिवाद 20 राज्यों के 233 जिलों में फैल चुका है।

पाकिस्तान और चीन निर्मित हथियार तथा गोलाबारूद नक्सलवादियों के हाथ में पहुंचने और एलटीटीई तथा पूर्वोत्तर के उग्रवादी समूहों के साथ माओवादियों के बढ़ते संबंधों की चिंताजनक खबरें आ रही हैं। माओवादियों तथा आतंकवादियों के बीच चाहे मामूली सा ही संबंध क्यों न हो, वह भारत के लिए गंभीर खतरे की बात होगी।

माओवादियों द्वारा जम्मू और कश्मीर के अलगाववादियों को समर्थन दे कर तथा पूर्वोत्तर के उग्रवादियों के साथ संपर्क कर भारत की भूमि में ऐसी दरार बना रहे हैं जो आंध्र-कर्नाटक की सीमा से उत्तर की ओर बढ़ रही है। इसकी एक षाखा परिचर्चित लाल गलियारे से होकर छत्तीसगढ़, झारखंड और उड़ीसा से पूर्वोत्तर तक फैली हुई है और वहीं दूसरी शाखा उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड में स्लीपर सेल्स के साथ संदेहास्पद संबंधों के जरिये जम्मू कश्मीर तक फैली रही है।

हमें साफ तौर पर समझ लेना चाहिए कि नक्सलवादियों की लड़ाई आदिवासियों के विकास या अधिकार को लेकर नहीं है बल्कि यह तो उनके वास्तविक और सुस्पष्ट एजेंडा जो कि लोकतांत्रिक भागीदारी या साधनों के जरिये नहीं बल्कि हिंसा के माध्यम से सत्ता पर काबिज होना है, को ढंकने मात्र का एक उपाय है।

कांग्रेस पार्टी अंशकालिक राजनीतिक फायदे के चलते नक्सलवाद से लड़ाई के राष्ट्रीय संकल्प के साथ समझौता कर रही है। एक ओर तो प्रधानमंत्री ऐलान करते हैं कि वामपंथी अतिवाद देश के लिए सबसे बड़ा खतरा है लेकिन वहीं दूसरी ओर वह अपने वक्तव्य के अनुसार राजनीतिक संकल्प या कार्रवाई नहीं करते है।

नक्सलवादियों द्वारा दंतेवाड़ा में 78 सुरक्षा बलों की नृशंस हत्या के बाद तत्कालीन गृह मंत्री ने नक्सल प्रभावित क्षेत्रों के लिए ''सफाई-कब्जा-विकास'' की नीति घोषित की थी। इसके तत्काल बाद कांग्रेस अध्यक्ष श्रीमती सोनिया गांधी और उनकी पार्टी के एक महासचिव सहित कई वरिष्ठ पदाधिकारियों ने विभिन्न प्रकाशनों में लेख लिखकर नक्सवादियों के पक्ष में सहानुभूति जाहिर की। इसका परिणाम यह हुआ की जहॉ वह प्रस्ताव रूक गया वहीं सुरक्षा बलों का भी मनोबल गिर गया। इसके कुछ समय बाद उसी गृह मंत्री ने अपनी अक्षमता प्रकट करते हुए बयान देना शुरू कर दिया कि उनके पास ''सीमित अधिकार'' हैं।

इस मामले में कांग्रेस पार्टी का ढोंग और दोहरा-चरित्र तब उजागर हुआ जब सोनिया गांधी की अध्यक्षता वाली राष्ट्रीय सलाहकार परिषद् (एनएसी) ने माओवादियों के कुछ जमीनी समर्थकों को चुन चुन कर अपना अपना सदस्य बनाया। मानवाधिकार गतिविधियों के नाम पर उनमें से कई

लोगों को सरकार के लिए नीतियां बनाने के काम में लगाया गया और कुछ को तो योजना आयोग में सलाहकार तक बना दिया गया।

मई 2013 की घटना के बाद से आज की तारीख तक इन कार्यकर्ताओं की ओर से एक शब्द भी सुनाई नहीं दिया है। इन सब बातों से अनजान बनते हुए कांग्रेस अध्यक्ष श्रीमती सोनिया गांधी ने जब इस नृशंस हमले के बाद रायपुर का दौरा किया तो अपने अनियंत्रित गुस्से का दिखावा करते हुए इस घटना के लिए जिम्मेदार लोगों को सबक सिखाने की मांग की।

भाजपा इस मुद्दे पर निरंतर ही प्रभावित लोगों खासकर आदिवासियों की भावनाओं के साथ रखकर एक राष्ट्रवादी नजरिया अपनाती रही है। भाजपा ने ही, श्री अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में राजग के शासनकाल में आदिवासी मामलों का एक अलग मंत्रालय बनाया जिसका काम आदिवासी क्षेत्रों और वहां रहने वाले लोगों का चहुंमुखी विकास करना है। छत्तीसगढ़ में पिछले नौ साल में डा. रमण सिंह के नेतृत्व में भाजपा सरकार ने विकास का व्यापक काम किया और एक बेहतर खाद्य सुरक्षा का एक कानून बनाया है जिसे राज्य के सक्षम सार्वजनिक वितरण प्रणाली के माध्यम से लागू किया जा रहा है।

माओवाद किसी एक राज्य का मुद्दा नहीं है। यह एक राष्ट्रीय मुद्दा है और इससे एक बहु-आयामी नीति के तहत निपटना चाहिए जिसमें सुरक्षा और विकास का सामंजस्य हो।

भारतीय जनता पार्टी का मानना है कि माओवादियों ने भारत की कल्पना के खिलाफ युद्ध छेड़ा है और इस लिए वैसा ही जवाब हमें देना चाहिए।

भाजपा मांग करती है कि नक्सलवादी समस्या से निपटने के लिए एक एकीकृत रणनीति की जरूरत है जिसमें नक्सल प्रभावित राज्यों को निरंतर केंद्र से परामर्श तथा सहयोग मिले। इसके लिए सुरक्षा तंत्र को समुचित रूप से मजबूत बनाने, ग्रे हाउंड जैसे विशेष बल गठित करने और समयबद्ध कार्ययोजना बनाने की जरूरत है। खुफिया जानकारी इकट्ठा करने की और बेहतर व्यवस्था होने की जरूरत है साथ ही साथ बहुत ही आधुनिक तंत्र विज्ञान मिलना चाहिए। इन सभी पहलुओं पर निरंतर निगरानी होने की जरूरत है। माओवादियों ने दी हुई चुनौती का मुकाबला करने के लिए अगर ऐसी कारगर रणनीति बनाई जाती है तो भारतीय जनता पार्टी उसका समर्थन करेगी। भाजपा मांग करती है कि केन्द्र सरकार नक्सलवादियों को धन भेजने को रोकने के लिए तुरंत उपाय करना चाहिए।

आतंकवाद पर बहस को सांप्रदायिक रंग देने के लिए धर्मनिरपेक्षता का उपयोग

गृह मंत्री श्री सुशील कुमार शिंदे ने इस बात की जानकारी मांगी है कि कितने मुसलमान आतंकवाद के आरोप में जेलों में बंद हैं। केरल विधान सभा ने एक मत से कोयंबटूर बम धमाके के आरोपी अब्दुल नसीर मदनी के पक्ष में मंतव्य दिया है। ज्ञातव्य है कि इस विस्फोट का निशाना श्री एल.के. आडवाणी थे और इसमें 60 निर्दोष लोगों ने अपनी जानें गंवाई थी।

भारत की जनता श्री सलमान खुर्शीद के चुनावी प्रहसन को अभी तक नहीं भूली है जिसमें उन्होंने दावा किया था कि बटला हाउस मुठभेड़ में आतंकवादियों की मृत्यु की खबर सुनकर श्रीमती सोनिया गांधी फूट-फूटकर रो पड़ी थीं। इसी तरह, श्री दिग्विजय सिंह द्वारा आजमगढ़ में संदिग्ध आतंकियों के घर का दौरा कर इस मुठभेड़ में शहीद पुलिस अधिकारी मोहन चन्द्र शर्मा के बलिदान पर ही प्रश्न उठाना आतंकवाद की पूरी कहानी को सांप्रदायिक रंग देने की कांग्रेस की कोशिश को उजागर करती है।

यह एजेंडा धर्मनिरपेक्षता के नाम पर चल रहा है। आतंकी साजिश करने वाले कुछ लोग हो सकता है कि धार्मिक उन्माद से प्रेरित हों लेकिन आतंकवाद के खिलाफ हमारी लड़ाई किसी धर्म के खिलाफ लड़ाई नहीं है। पूर्व गृह मंत्री श्री चिदंबरम और मौजूदा गृह मंत्री श्री शिन्दे ''हिन्दू आतंकवाद'' और ''भगवा आतंकवाद'' जैसे शब्दों का इस्तेमाल कर आतंकवाद को सांप्रदायिक रंग देने की कोशिश करते रहे हैं। यह कांग्रेस की वोट बैंक तथा तुष्टिकरण की नीति का ही हिस्सा है।

भारतीय जनता पार्टी आतंकवाद को सांप्रदायिक रंग देने

आतंकी साजिश करने वाले कुछ लोग हो सकता है कि धार्मिक उन्माद से प्रेरित हों लेकिन आतंकवाद के खिलाफ हमारी लड़ाई किसी धर्म के खिलाफ लड़ाई नहीं है। पूर्व गृह मंत्री श्री चिदंबरम और मौजूदा गृह मंत्री श्री शिन्दे ''हिन्दू आतंकवाद'' और ''भगवा आतंकवाद'' जैसे शब्दों का इस्तेमाल कर आतंकवाद को सांप्रदायिक रंग देने की कोशिश करते रहे हैं। यह कांग्रेस की वोट बैंक तथा तुष्टिकरण की नीति का ही हिस्सा है।

की इन कोशिशों की भर्त्सना करती है। आतंकवाद से आतंक की ही तरह निपटना राष्ट्रहित में होगा और इसका मुकाबला पूरी दृढ़ता के साथ किया जाना चाहिए।

पाकिस्तान की बर्बरता

पाकिस्तानी जेल में बंद भारतीय नागरिक सरबजीत सिंह के साथ जो बर्ताव हुआ वह भारतीय जेल से रिहा हुए पाकिस्तानी कैदी डा. चिश्ती के साथ हुए व्यवहार के बिल्कुल उलट था। प्रत्युत्तर में पाकिस्तान से भारतीय कैदियों के साथ ऐसे व्यवहार की अपेक्षा वास्तविक नहीं लेकिन जेनेवा संधि के तहत एक गिरफ्तार सैनिकों के साथ उचित बर्ताव की उम्मीद निश्चित ही की जाती है। सरबजीत के पहले भी चमेल सिंह की इसी तरह से पाकिस्तान के कोटलखपत जेल में हत्या हुई थी।

जिस तरह से पाकिस्तान द्वारा भारतीय सैनिकों के क्षत-विक्षत शव उनके परिवारों को भेजे गये उससे चोट के साथ-साथ अपमान भी मिला। भारत में आज भी इस बात को लेकर आक्रोश है कि पाकिस्तान इन तथ्यों को झुठलाने की कोशिश में लगा हुआ है। भारत सरकार इन सभी संकटों के दौरान सिर्फ कुछ एक मौकों को छोड़ कर ज्यादातर वक्त खामोश ही रही है और जब-जब उन्होंने बयान भी दिया तो ऐसा मानो वह बिल्कुल असहाय हो। सरकार के इस व्यवहार से भारत की आम जनता में एक कुंठा और निराशा का भाव है।

जिस तरह से पाकिस्तान द्वारा भारतीय सैनिकों के क्षत-विक्षत शव उनके परिवारों को भेजे गये उससे चोट के साथ-साथ अपमान भी मिला। भारत में आज भी इस बात को लेकर आक्रोश है कि पाकिस्तान इन तथ्यों को झुठलाने की कोशिश में लगा हुआ है। भारत सरकार इन सभी संकटों के दौरान सिर्फ कुछ एक मौकों को छोड़ कर ज्यादातर वक्त खामोश ही रही है और जब-जब उन्होंने बयान भी दिया तो ऐसा मानो वह बिल्कुल असहाय हो।

पाकिस्तान गिरफ्तार किये गये सैनिकों के क्षत-विक्षत शव वापस भेज सकता है, पाकिस्तानी जेलों में बंद 1971 के युद्धबंदियों की सूची खो जाने की बात करता है, फिर भी हाफिज सईद तथा भारतीय अपराधी दाउद इब्राहिम को हर तरह का ऐश्वर्य और स्वतंत्रता दे सकता है लेकिन इतना भी नहीं चाहता है कि भारत अपने वैध अधिकारों की मांग भी करे।

सीमा पर बार बार युद्ध-विराम का उल्लंघन हो रहा है। जम्मू कश्मीर में दिन ब दिन आत्मघाती हमले बढ़ रहे हैं। हैदराबाद में फरवरी में दोहरे बम धमाके हुए जिसके बाद इस साल मार्च में श्रीनगर के बेमिना इलाके में सीआरपीएफ के शिविर पर हुआ आत्मघाती हमला सामान्य स्थिति बहाल होने के संबंध में सरकार के दावों की पोल खोलती है। पाकिस्तान की अदालत में नये खुलासे हुऐ हैं जिनके मुताबिक कश्मीर में उनके अधूरे एजेंडा को पूरा करने के लिए गुप्त तरीके से भारी धनराशि खर्च करने की बात कही गयी है।

इसके विपरीत सरकार का बर्ताव पूरी तरह बेफिक्र सा प्रतीत होता है। 21वीं सदी की इस बर्बरता से हम उबर पाते, उससे पहले ही हमारे विदेश मंत्री ने भारत की निजी यात्रा पर आये अपने पाकिस्तानी समकक्ष की शान में एक शानदार रात्रिभोज का आयोजन किया। इसी तरह 2009 में शर्म-अल-शेख में मात्र एक बयान जारी कर वर्तमान सरकार ने राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन सरकार में श्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा विदेश नीति के परिपेक्ष्य में किये गये अच्छे कार्यों पर भी एक झटके में पानी फेर दिया। राजग के शासनकाल में श्री वाजपेयी ने जनवरी 2004 में एक लिखित आश्वासन के जरिये यह सुनिश्चित कराया था कि पाकिस्तान अपने भूभाग का इस्तेमाल भारत के खिलाफ आतंकवादी गतिविधियां चलाने के लिए नहीं होने देगा।

कांग्रेस के नेतृत्व वाली यूपीए सरकार मुंबई हमले के लिए भी न्याय दिलाने में नाकाम रही है। इस हमले के साजिशकर्ता पाकिस्तान में खुलेआम घूम रहे हैं। हैडली से जांचकर्ता भारत में पूछताछ भी नहीं ही कर पाये हैं। फिर भी यह सरकार समग्र वार्ता के लिए तैयार है।

इसलिए पाकिस्तान में नवनिर्वाचित सरकार के साथ, राष्ट्रीय सम्मान के साथ कोई समझौता किये बिना, संबंध बेहतर करने के प्रयासों में सतर्क रहने की इस सरकार से अपेक्षा के उचित कारण हैं।

इटली के नौसिकों ने हमारी न्यायिक प्रणाली का मजाक बनाया

इटली के नौसैनिकों ने मछली पकड़ रहे दो गरीब भारतीय मछुआरों की हत्या कर दी। जब उन्हें पकड़कर अदालत में पेश किया गया तो पहले तो उन्हें किसमस मनाने और बाद में वोट डालने के लिए स्वदेश भेजा गया। जिसके कारणवश उन्होंने अदालती कार्यवाही से बचने के लिए अपने देश में ही ठहरने की कोशिश की। भारत सरकार ने अभी तक यह खुलासा नहीं किया है कि क्या उनके भारत वापस

लौटने एवं अदालती कार्यवाही का सामना करने के लिए सरकार ने पहले से ही तय कोई शर्त मानने की सहमति तो नहीं जतायी है? हालांकि इटली के नौसैनिकों स्वदेश जाने की अनुमति अदालत ने दी थी लेकिन सवाल उठते हैं कि अगर उनके साथ कोई हुआ है तो भारत सरकार आरोपी के साथ वह समझौता आखिर कैसे तय कर सकती है।

भटकती भारतीय विदेश नीति

राजनीतिक दिशा के अभाव के चलते भारतीय विदेश नीति इस समय एक भटकाव पर है। वह देश के समक्ष आयीं चुनौतियों का प्रभावी ढंग से सामना करने में नितांत अक्षम है। दक्षेस देशों के साथ संबंध कभी भी इतने नाजुक नहीं रहे जितने आजकल हैं। मालदीव में भारत के प्रति जो सद्भाव था, वह हम आज खो चुके है। नेपाल ने भले ही अपने लिए कोई भी संविधान अभी तक नहीं बनाया हो लेकिन ऐसा लगता है कि वह भारत से कुछ अपेक्षा नहीं रखता। यह सच है कि श्रीलंका ने अभी तक तमिल बहुल क्षेत्रों में सत्ता के विकेन्द्रीकरण तथा विधान सभा के चुनाव कराने के आश्वासन को पूरा नहीं किया है।

राजनीतिक दिशा के अभाव के चलते भारतीय विदेश नीति इस समय एक भटकाव पर है। वह देश के समक्ष आयीं चुनौतियों का प्रभावी ढंग से सामना करने में नितांत अक्षम है। दक्षेस देशों के साथ संबंध कभी भी इतने नाजुक नहीं रहे जितने आजकल हैं। मालदीव में भारत के प्रति जो सद्भाव था, वह हम आज खो चुके है। नेपाल ने भले ही अपने लिए कोई भी संविधान अभी तक नहीं बनाया हो लेकिन ऐसा लगता है कि वह भारत से कुछ अपेक्षा नहीं रखता।

वर्ष 2012 में सिर्फ चीन द्वारा हमारे भूभाग पर 400 से अधिक बार घुसपैठ की कोशिश की गयी है। लद्दाख के दौलत बेग ओल्डी सेक्टर में घुसपैठ उसकी धृष्टता का स्पष्ट प्रमाण हैं। ब्रहमपुत्र पर बांध, पाक-अधिकृत कश्मीर में सड़क निर्माण तथा संचार टावर बनाना, दक्षिण चीन सागर में अनुचित दावे कर वियतनाम के साथ भारत के व्यवसायिक हितों को प्रभावित करना कुछ ऐसे चीन की ओर से उठने वाले खतरे हैं जिन पर हमारे विदेश मंत्रालय ने समुचित रूप से ध्यान नहीं दिया है।

यह सरकार भारत की समुद्री सीमा और ऊर्जा सुरक्षा करने में बुरी तरह से विफल रही है। हिंद महासागर क्षेत्र की सुरक्षा के महत्त्व को समझा जाना चाहिए ताकि यह हमारे लिए एक प्रभावी क्षेत्र बन सके, अत: इस पर ध्यान देने की तत्काल आवश्यकता है। भारत हिंद महासागर क्षेत्र के देशों के साथ अधिकाधिक गहन संबंध बनाना चाहती है ताकि चीन के बढ़ते प्रभाव पर अंकुश लगाया जा सके। हम अटल बिहारी वाजपेयी के 'लुक ईस्ट विज़न' अर्थात् 'पूर्वी देशों की नीति' को आगे बढ़ाने के लिए दृढ़ संकल्प है, जिसे यूपीए सरकार ने छोड़ दिया है।

यूपीए सरकार चीन सरकार की भारतीय नागरिकों को स्टेप्ल्ड वीजा जारी करने और बीजिंग सरकार के हठ के कारण अरूणाचल के लोगों की कठिनाइयों का समाधान करने में भी बुरी तरह विफल रही है।

भाजपा के नेतृत्व वाली राजग सरकार में जब बागडोर श्री अटल बिहारी वाजपेयी जैसे युगद्रष्टा के हाथों में थी, उस समय सभी पड़ोसी देशों के साथ हमारे सौहार्दपूर्ण तथा भरोसेमंद संबंध थे। चीन, इस्रायल और अमेरिका के साथ भी संबंधों में अत्यधिक सुधार हुआ था। राष्ट्रीय गरिमा तथा संप्रभुता को उच्चतम स्तर पर रखा गया था।

भाजपा देश की इस गरिमा को संरक्षित रखने के लिए प्रतिबद्ध है। भाजपा भारत की सुरक्षा या कूटनीतिक हितों के साथ किसी भी तरह के समझौते की अनुमति नहीं देगी। अगर ऐसी कोई परिस्थिति खड़ी हुई तो वह राष्ट्रहितों की आवश्यकता अनुसार उचित कार्यवाही से भी नहीं हिचकेगी।■

नरेंद्र मोदी बने भाजपा चुनाव प्रचार समिति के अध्यक्ष

गोवा में भाजपा राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक के अंतिम दिन पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राजनाथ सिंह ने गुजरात के मुख्यमंत्री श्री नरेंद्र मोदी को चुनाव प्रचार समिति का अध्यक्ष नियुक्त किए जाने की घोषणा की। इस अवसर पर श्री राजनाथ सिंह ने कहा कि 2014 में होने वाले लोकसभा चुनाव पार्टी के लिए बड़ी चुनौती है। हमें पूरा भरोसा है कि भाजपा ही अगली सरकार का नेतृत्व करेगी। ■

यूपीए सरकार को उखाड़ फेंकना हमारा ऐतिहासिक कर्तव्य

भाजपा राष्ट्रीय कार्यकारिणी बैठक में पार्टी के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नितिन गडकरी ने राजनीतिक प्रस्ताव प्रस्तुत किया, जिसका अनुमोदन मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान एवं गोवा के मुख्यमंत्री श्री मनोहर परिंकर ने किया। यह प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित हो गया। इस प्रस्ताव में कहा गया है कि पिछले चार वर्षों में कांग्रेस द्वारा भारत की जनता के विरूद्ध किए अपराधों की सूची काफी लम्बी है, इसमें से तीन प्रमुख हैं: निंदनीय भ्रष्टाचार, अर्थव्यवस्था की दुर्दशा और हमारे लोकतंत्र की संघीय भावना पर प्राणघातक हमला। हम यहां इस प्रस्ताव का पूरा पाठ प्रकाशित कर रहे हैं :

स्वतंत्रता के इस छियासठवें वर्ष में - जब वैश्वीकरण के पश्चात् जन्मी पीढ़ी वर्तमान सरकार से अपनी महान आकांक्षाओं को पूरा करने की आशा रखती है - तब नाकारा यूपीए ने समाज के सभी वर्गों को गहन निराशा में डाल दिया है। गोवा में हो रही भारतीय जनता पार्टी की राष्ट्रीय कार्यकारिणी बैठक इस प्रस्ताव के माध्यम से लोगों के मनों में गहरे पैठी विश्वासघात की भावना को मुखरित कर रही है। यह प्रस्ताव, वर्तमान की भ्रष्टतम सरकार को उखाड़ फेंकने की हमारी वचनबद्धता का प्रकटीकरण है।

22 मई, 2013 को कांग्रेस नेतृत्व वाली यूपीए II सरकार ने सत्ता में अपने चार वर्ष पूरे किए। इस अवसर पर आयोजित फीके समारोह में अपनी पीठ थपथपाने और अपने मुंह मियां मिट्ठू बनने के सिवाय कुछ नहीं था। इसके नेताओं के पास कोई ठोस या ऐसा उल्लेखनीय कुछ नहीं था जिसकी तारीफ की जा सके। पूरा माहौल उदासी, निराशा और नकारात्मकता से लबालब था। यूपीए II की एकमात्र उपलब्धि यह प्रतीत होती है कि इसने सत्ता में चार वर्ष पूरे कर लिए हैं। जहां तक लोगों के निर्णय का सम्बन्ध है, वह भी मानते हैं कि इस सरकार ने राष्ट्र को गंभीर नुकसान पहुंचाया है।

पिछले चार वर्षों में कांग्रेस द्वारा भारत की जनता के विरूद्ध किए अपराधों की सूची काफी लम्बी है, इसमें से तीन प्रमुख हैं: निंदनीय भ्रष्टाचार, अर्थव्यवस्था की दुर्दशा और हमारे राज्य तंत्र की संघीय भावना पर प्राणघातक हमला।

भारी भ्रष्टाचार, जनता के पैसे की व्यापक लूट वाले घोटाले दर घोटाले, निचले दर्जे के कुशासन ने आम आदमी की परेशानियों को बेतहाशा बढ़ा दिया है। अनिश्चित तथा अनिर्णायक नेतृत्व के चलते भारत की समूची विकास गाथा गंभीर संदेहों के घेरे में है। इस अवसादकारी गठजोड़ ने भारत की छवि पर एक गहरा दाग लगाया है।

नेतृत्व का दोषपूर्ण ढांचा

प्रधानमंत्री डा॰ मनमोहन सिंह इस सरकार के असली नेता नहीं हैं। वह सत्ता में तो हैं परन्तु उनके पास कोई अधिकार नहीं है। असली अधिकार यूपीए की चेयरपर्सन श्रीमती सोनिया गांधी के पास हैं जो नीतिगत मुद्दों पर अंतिम निर्णय करती हैं। भविष्य के लिए पार्टी उत्तराधिकारी, उनके पुत्र की ओर देख रही हैं। भारत जैसे विशाल देश के प्रधानमंत्री पद के कमजोर होने का इससे ज्यादा बढ़ कर कोई और उदाहरण नहीं हो सकता कि उनकी सरकार के वरिष्ठ मंत्री और पार्टी नेता श्री राहुल गांधी को नेता और अगले चुनावों में प्रधानमंत्री पद का उम्मीदवार घोषित करने की मांग नियमित रूप से करते रहते हैं जबकि डा॰ सिंह को अपनी कुर्सी पर बने रहने के लिए श्रीमती सोनिया गांधी से समय-समय पर प्रमाणपत्र लेने को बाध्य होना पड़ता है।

वास्तव में, समाजवादी पार्टी जिसकी बैसाखी पर यूपीए II टिका है, के अध्यक्ष ने सार्वजनिक रूप से कहा है कि डा॰ मनमोहन सिंह न तो मजबूत नेता हैं और न ही फैसले लेने के लिए स्वतंत्र हैं। पिछले नौ वर्षों से लगातार प्रधानमंत्री रहने के बावजूद डा॰ सिंह अनिर्णय, असमर्थ और चुप्पी के पर्याय बने हुए हैं जिसकी देश को भारी कीमत चुकानी पड़ रही है।

अनियंत्रित भ्रष्टाचार -यूपीए सरकार की मुख्य पहचान

भाजपा बार-बार यह दोहराती रही है कि कांग्रेस के नेतृत्व वाली यूपीए सरकार, स्वतंत्रता के बाद से अब तक की सर्वाधिक भ्रष्ट सरकार है और दिन-प्रतिदिन यह धारणा पुष्ट होती जा रही है। घूस, दलाली, शुद्ध आर्थिक अनियमितताएं और अंतहीन घोटाले इतने आम हो चुके है कि इनकी गिनती करना मुश्किल है। इसकी कोई गारण्टी नहीं है कि जल्दी ही कोई और बड़ा घोटाला सामने नहीं आएगा।

सत्ता के अहंकार ने कांग्रेस को जनता की नाराजगी के प्रति उदासीन बना दिया है। सरकार में रहकर उसने हर दिन राष्ट्र के संसाधनों की लूट मचाई हुई है चाहे वह किसानों की भूमि हो, स्पैक्ट्रम, या खाद्यान्न यहां तक कि मंत्रीगण भी निजी तौर पर भ्रष्टाचार करने की आजादी मानकर जहां और जब लगे संपत्ति बटोरने में लगे हैं। कुछ सप्ताह पूर्व, एक केबिनेट मंत्री को इसलिए त्यागपत्र देने को बाध्य होना पड़ा क्योंकि उसका एक रिश्तेदार उनके नाम पर घूस लेते पुलिस के हाथों पकड़ा गया। दूसरे को इसलिए जाना पड़ा कि वह कोयला खदानों के आवंटन के घोटाले में प्रधानमंत्री को बचाने के लिए सीबीआई के साक्ष्यों से छेड़छाड़ कर रहा था। कांग्रेस ऊपर से नीचे तक गल चुकी है। कांग्रेस अध्यक्ष का परिवार कृषि भूमि के फर्जी सौदों में लिप्त पाया गया है। और इटली की पुलिस ने आगस्ता हेलीकाप्टर सौदे में कथित तौर पर दलाली देने वालों में सत्तारूढ़ दल के 'परिवार' के शामिल होने का उल्लेख किया है।

कुछ सप्ताह पूर्व, एक केबिनेट मंत्री को इसलिए त्यागपत्र देने को बाध्य होना पड़ा क्योंकि उसका एक रिश्तेदार उनके नाम पर घूस लेते पुलिस के हाथों पकड़ा गया। दूसरे को इसलिए जाना पड़ा कि वह कोयला खदानों के आवंटन के घोटाले में प्रधानमंत्री को बचाने के लिए सीबीआई के साक्ष्यों से छेड़छाड़ कर रहा था। कांग्रेस ऊपर से नीचे तक गल चुकी है। कांग्रेस अध्यक्ष का परिवार कृषि भूमि के फर्जी सौदों में लिप्त पाया गया है।

जनता के करोड़ों - अरबों रूपयों की लूट कांग्रेस में शीर्ष पर बैठे लोगों की शह और मिलीभगत से हो रही है। लगभग 1.87 लाख करोड़ रूपए वाले 'कोलगेट' जैसे बड़े घोटाले में प्रधानमंत्री डॉ॰ मनमोहन सिंह की भूमिका भी गंभीर संदेहों के घेरे में है क्योंकि जब यह घोटाला हुआ तब वह कोयला मंत्री थे। जब इस सम्बन्ध में सीबीआई जांच की निगरानी सर्वोच्च न्यायालय कर रहा था तब पूर्व विधि मंत्री और अधिकारियों ने हस्तक्षेप कर रिपोर्ट को इस तरह से बदलने की कोशिश की कि सच्चाई सामने न आ सके। साफ है कि यह सब प्रधानमंत्री को बचाने के लिए किया गया। भारतीयों को यह देखकर और हताशा हुई कि पिछले कुछ सप्ताहों में रेलवे बोर्ड के उच्च पदों को रेलवे मंत्री के परिवार के सदस्यों ने बेचा।

राष्ट्रीय स्तर पर हो-हल्ला मचने के बावजूद प्रधानमंत्री और श्रीमती सोनिया गांधी द्वारा इन मंत्रियों को बचाने की कोशिश की गई। तब भी सतत् जनमत के दबाव और इन मंत्रियों के विरूद्ध भाजपा द्वारा चलाए गए तथा निर्णायक अभियान के चलते दोनों को त्यागपत्र देने पर बाध्य होना पड़ा। संसद का पिछला सत्र सरकार द्वारा विधि एवं रेलवे मंत्री को बचाने के मोह में व्यर्थ हो गया। मजेदार यह रहा कि सत्र समाप्ति के दो दिन पूर्व, इन मंत्रियों ने त्यागपत्र दे दिया। यह इस सरकार की राजनीतिक जवाबदेही का निराशाजनक रिकार्ड है।

संचार मंत्रालय में 2जी लाइसेंस आवंटन में भयंकर भ्रष्टाचार स्वतंत्र भारत के इतिहास में एक शर्मनाक किस्सा बना हुआ है। इसमें भी प्रधानमंत्री और वर्तमान वित्त मंत्री श्री चिदम्बरम को काफी कुछ स्पष्टीकरण देना शेष है। शर्मनाक यह है कि उनकी भूमिका की कोई जांच ही नहीं हुई है। इसी प्रकार राष्ट्रमण्डल खेलों के आयोजन में हुए घोटालों में शुंगलू कमेटी की रिपोर्ट में दिल्ली की मुख्यमंत्री श्रीमती शीला दीक्षित की भूमिका पाए जाने पर भी कोई जांच नहीं की गई है। इसके अलावा दिल्ली लोकायुक्त द्वारा हाल ही में कटघरे में खड़ी की गई दिल्ली की मुख्यमंत्री को यह कहने में कोई संकोच नहीं कि दिल्ली में भ्रष्टाचार कोई मुद्दा नहीं है।

हाल ही में दिल्ली की मुख्यमंत्री श्रीमती शीला दीक्षित के द्वारा विगत वर्ष इजराइली राजनयिक के उपर हुए आतंकी हमले से सम्बन्धित एक आरोपी के साथ किसी कार्यक्रम में सहभागी होने की घटना सामने आई है। भारतीय जनता पार्टी इस बात पर भी अपनी गहरी चिंता अभिव्यक्त कर रही है।

विदेशों बैंकों में चुरा कर ले जाए गए लगभग 25 लाख करोड़ रूपए काले धन को वापस लाने हेतु यूपीए सरकार ने कोई निर्णायक कदम नहीं उठाया और न ही दिल्ली के अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे के निजीकरण के नाम पर करोड़ों रूपए मूल्य की भूमि के व्यावसायिक आवंटन में घोटाले और न ही आदर्श हाऊसिंग घोटाला रोकने हेतु और न ही हेलीकाप्टर खरीद में घूस लेने वालों के विरूद्ध कदम उठाया। श्रीमती सोनिया गांधी और उनके पुत्र ने, विशेषकर हेलीकॉप्टर

सौदे में आश्चर्यजनक चुप्पी साध रखी है।

सन् 2009 में श्रीमती सोनिया ने घोषणा की थी कि सौ दिनों के भीतर ही भ्रष्टाचार को नियंत्रण में रखने हेतु प्रयास किए जाएंगे। बजाय उसके अब यह बढ़ते-बढ़ते कैंसर बन गया है। संसद और संसद के बाहर भाजपा के ठोस अभियान, मीडिया और सामाजिक संगठनों की पहल और न्यायालयों के हस्तक्षेप से जांच शुरू हो पाई।

संस्थानों को कमजोर बनाना

यूपीए ने जानबूझकर और लगातार लोकतांत्रिक संस्थानों को अवहेलना की तथा उन्हें कमजोर किया है। इनमें संवैधानिक और लोकतांत्रिक संस्थागत पदों पर नियुक्त किए जाने वाले लोगों का चयन भी है। यूपीए अल्पमत में हैं और इसका जीवन सीबीआई पर टिका है जो एक पक्षपातपूर्ण तथा पिलपिली एजेंसी बन गई है। कांग्रेस सरकार समाजवादी पार्टी और बहुजन समाज पार्टी को जब चाहे ब्लैकमेल कर समर्थन देने हेतु बाध्य कर देती है। चाहे निर्वाचन आयोग हो, राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग या केन्द्रीय सतर्कता आयोग - इनमें कुछ नियुक्तियां अत्यंत आपत्तिजनक हैं। नियुक्तियां करते समय उठाई गई विधिसम्मत आपत्तियों को दरकिनार कर दिया गया। कई मौकों पर न्यायालय ने इन मुख्य नियुक्तियों को रद्द कर दिया। सीएजी की सार्वजनिक रूप से वरिष्ठ मंत्रियों ने इसलिए आलोचना की क्योंकि वे इस सरकार की वित्तीय अनियमितताओं पर सवाल उठा रहे थे। कांग्रेस पार्टी ने जिस ढंग से संयुक्त संसदीय समिति जैसी महत्वपूर्ण संसदीय संस्थाओं की पवित्रता समाप्त करने के प्रयास किए जिस के चलते इस समिति के अनेक सदस्य दलगत सीमाओं से ऊपर उठकर समिति के अध्यक्ष को हटाने का अनुरोध करने पर मजबूर हुए हैं।

घोटालों से घिरे और राष्ट्रीय उद्देश्यों से वंचित कांग्रेस नेतृत्व वाली यूपीए ने एक कमजोर सरकार से भारत को कमजोर कर दिया है। कुछ पड़ोसी देशों के आक्रामक रूख से हमारी विश्वसनीयता का क्षरण साफ दिखता है जबकि अन्य देश आतंकवाद जैसी हमारी मुख्य चिंता के प्रति बेरूखी दिखाते हैं। 1993 और 2008 में मुम्बई पर अक्षम्य हमले के दोषी आतंकवादी संगठनों और अपराधियों के सरगना अपने अड्डों में सुरक्षित हैं जबकि हमारी ओर से उठाए जाने वाले कदमों को सिवाय तुष्टिकरण के कुछ और नहीं कहा जा सकता।

अर्थव्यवस्था की दुर्गति

आंकड़े भरे तर्क कभी भी तेजी से गिरती अर्थव्यवस्था के कष्टकारी प्रभाव को सही ढंग से प्रकट नहीं करते। सन् 2004 से हम जो हालात देख रहे हैं उन्हें निराशा के दशक के रूप में ही वर्णित किया जा सकता है। श्री अटल बिहारी वाजपेयी का करिश्माई नेतृत्व, और उनकी सूझ-बूझ, परिपक्व नीतियों ने भारत को ऊंची वृद्धि, उच्च राष्ट्रीय राजस्व के माध्यम से गरीबी उन्मूलन और एक आधुनिक अर्थव्यवस्था के लिए एक आधारभूत ढांचे के निर्माण के पथ पर अग्रसर किया। कांग्रेस के नेतृत्व वाले यूपीए ने भारत को आर्थिक निराशा की ओर धकेल दिया है। सन् 2004 में जब एनडीए सरकार से हटी तब वृद्धि 8.3 प्रतिशत थी जो आज 5 प्रतिशत की दु:खद अवस्था में पहुंच गई है। मुद्रास्फीति के चलते शहरों और गांवों में गरीबों तथा मध्य वर्ग से रोटी छिन गई है। बेरोजगारी और अल्प-रोजगार के चाबुक ने गरीबों के मन पर घाव बना दिए हैं। निर्णय प्रक्रिया में पंगुता के फलस्वरूप औद्योगिक क्षेत्र का बेहद नुकसान हुआ है। सिर्फ एक क्षेत्र में बड़ी वृद्धि हुई है: सत्ता में बैठे लोगों और उनके दरबारियों की सम्पत्ति।

भारतीय अर्थव्यवस्था के शुद्ध कुप्रबन्धन और एक 'अर्थशास्त्री' प्रधानमंत्री डा॰ मनमोहन सिंह के नेतृत्व में कुशासन के चलते भारत की वृद्धि गाथा ठप और पंगु बन गई है। सन् 2004 में यूपीए को एक तेजी से बढ़ती और फलती-फूलती अर्थव्यवस्था विरासत में मिली थी। यूपीए के शुरूआती वर्षों में पुरानी नीतियों के आधार पर आर्थिक वृद्धि देखने को मिली। यूपीए के शासनकाल में अप्रत्याशित मंहगाई ने आम आदमी के दु:खों में बेतहाशा वृद्धि की है। देश का निवेश वातावरण बाधित हो गया है।

भारतीय अर्थव्यवस्था के शुद्ध कुप्रबन्धन और एक 'अर्थशास्त्री' प्रधानमंत्री डा॰ मनमोहन सिंह के नेतृत्व में कुशासन के चलते भारत की वृद्धि गाथा ठप और पंगु बन गई है। सन् 2004 में यूपीए को एक तेजी से बढ़ती और फलती-फूलती अर्थव्यवस्था विरासत में मिली थी। यूपीए के शुरूआती वर्षों में पुरानी नीतियों के आधार पर आर्थिक वृद्धि देखने को मिली। यूपीए के शासनकाल में अप्रत्याशित मंहगाई ने आम आदमी के दु:खों में बेतहाशा वृद्धि की है। देश का निवेश वातावरण बाधित हो गया है। कभी दुनियाभर में निवेश हेतु 'शो-केस' बनने वाली भारतीय अर्थव्यवस्था अपना आकर्षण खो चुकी है। घरेलू और विदेशी निवेश धीमा पड़ चुका है। देश से निवेश का बाहर जाना शुरू हो गया है। भारतीय उद्योगों को विदेशों में अच्छा निवेश गंतव्य मिल रहा

है। रोजगार निर्माण पर मार पड़ने के कारण बेरोजगारी अनियंत्रित हो रही है। वृद्धि आंकड़ा तेजी से गिरकर पांच प्रतिशत पर आना असफलता की कहानी कहता है।

यहां तक कि टेलीकॉम, ऊर्जा, राष्ट्रीय राजमार्गों, ग्रामीण सड़कों, समुद्री बंदरगाहों जैसी सफलता गाथाओं को गंभीर धक्का लगा है। रुपया कमजोर होकर खतरनाक स्तर पर पहुंचा है। सरकार द्वारा मल्टीब्रांड रिटेल सेक्टर में विदेशी प्रत्यक्ष निवेश (एफडीआई) की अनुमति देने से घरेलू रिटेल, उत्पादन और ग्राहकों के लिए गंभीर खतरा पैदा हो गया है।

कृषि क्षेत्र उन नीतियों से पीड़ित है जो आपदा लाती हैं। भारतीय किसान भारी कर्जे के बोझ तले दबे जा रहे हैं, सिंचाई सुविधाएं अत्यल्प हैं। देश के अधिकांश भागों में कृषि वृद्धि दर अपर्याप्त है। किसानों की आत्महत्याएं अबाधित रूप से जारी हैं। और यूपीए उदासीन, हृदयहीन तमाशबीन बनी बैठी है। देश में कृषि वृद्धि मुख्य रूप से मध्यप्रदेश, गुजरात और बिहार जैसे राज्यों की महत्वपूर्ण वृद्धि का नतीजा है। सरकार में अपने चार वर्ष पूरे करने पर डॉ॰ मनमोहन सिंह इसके लिए यह सफाई देते रहे कि गिलास आधा खाली है। ऐसा कहते समय वह पूरी तरह यह भूल गए कि श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने भरा हुआ गिलास छोड़ा था। नौ वर्ष पश्चात् वह गिलास भ्रष्टाचार से लबालब भरा है।

देश की जनता घोर भ्रष्टाचार, कुशासन, मंहगाई और इस सरकार की उदासीनता से सचमुच तंग हो गई हैं। भाजपा लोगों की समस्याओं का मुखरित कर अपना कार्य जारी रखते हुए इस जर्जर सरकार को चुनौती देती रहेगी। हम लोगों से वायदा करते हैं कि हम देश को उसका गौरव पुनः दिलाएंगे और अपने देश को निराशा और अंधकार से मुक्त करेंगे।

महिलाओं पर अत्याचार

यूपीए शासन के दौरान महिलाओं के सम्मान की रक्षा करने और उनको सुरक्षा प्रदान करने में कमजोरी साफ दिखती है। पिछले कुछ वर्षों से महिलाओं पर अत्याचार लगभग रोजमर्रा की घटना बन गई है। बलात्कार, सामूहिक बलात्कार, बलात हमलों और तेजाबी हमले आए दिन होते रहते हैं। यद्यपि जनमत के दवाब में कानून में कुछ बदलाव तो किए गए हैं परन्तु असली जीवन में इसका असर अभी महसूस नहीं हो रहा।

भाजपा के नेतृत्व वाला एनडीए एकमात्र विश्वसनीय विकल्प

भाजपा – गुजरात, मध्य प्रदेश, बिहार, छत्तीसगढ़, पंजाब और गोवा की अपनी राज्य सरकारों को उनकी शानदार उपलब्धियों के लिए बधाई देती है, जिन्होंने लोगों का दिल जीता है। इन सरकारों ने अकेले या फिर गठबंधन में, आर्थिक वृद्धि और ईमानदारी से संचालित कल्याण कार्यक्रमों से लाखों लोगों को गरीबी के गर्त से ऊपर उठाया है। इन्होंने समुदायों के बीच शांति और सद्भाव सुनिश्चित किया है। प्रत्येक समुदाय, चाहे वह बहुसंख्यक या अल्पसंख्यक – धार्मिक अथवा जातीय हों – सभी एक समान हैं। सेक्युलरिज्म का असली अर्थ सर्वधर्म समभाव है। हमारे सकारात्मक कार्यक्रमों ने "भूख" को एक ऐसी असली समस्या के रूप में रेखांकित किया है जिस पर तत्काल ध्यान देने की जरूरत है, और सभी वर्गों को प्रोत्साहन कार्यक्रम प्रत्येक विभेद से ऊपर है।

इसकी तुलना में यूपीए का रिकार्ड मायूसी और निराशाभरा है। देश की जनता घोर भ्रष्टाचार, कुशासन, मंहगाई और इस सरकार की उदासीनता से सचमुच तंग हो गई हैं। भाजपा लोगों की समस्याओं का मुखरित कर अपना कार्य जारी रखते हुए इस जर्जर सरकार को चुनौती देती रहेगी। हम लोगों से वायदा करते हैं कि हम देश को उसका गौरव पुनः दिलाएंगे और अपने देश को निराशा और अंधकार से मुक्त करेंगे।

यह एक प्रमाणित तथ्य है कि श्री अटल बिहारी वाजपेयी के योग्य नेतृत्व में एनडीए ने देश को प्रगति के पथ पर आगे बढ़ाया था। हमने अभाव की अर्थव्यवस्था को अधिकता में बदल दिया था। 'कनेक्टिविटी' उन दिनों नारा (वाचवर्ड) बन गई थी। संचार से राजमार्गों तक हमने इस महान राष्ट्र को सफलतापूर्वक एकता में गूंथ दिया था। सुशासन की कसौटी पर हमारी विश्वसनीयता भाजपा-एनडीए शासित राज्यों की 'परफोरमेंस' से और पुष्ट होती है। याद रहे कि सुशासन सम्बन्धी सभी महत्वपूर्ण और प्रतिष्ठित पुरस्कार, राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हमारी राज्य सरकारों को मिले और हमें इस पर गर्व है। यूपीए ने देश को रसातल के कगार पर ला खड़ा कर दिया गया है। ऐसे संकट में यूपीए को हराना मात्र दलगत इच्छा नहीं अपितु एक राष्ट्रीय कर्त्तव्य है।

जनता यूपीए के जाने और एनडीए के आने की बाट जोह रही है। भारतीय जनता पार्टी देश की जनता के इस संकल्प को साकार करने का शक्तिशाली साधन है। हमें अवश्य याद रखना होगा कि भाजपा के नेतृत्व वाला एनडीए ही इस निष्क्रिय यूपीए का एकमात्र विश्वसनीय विकल्प है, हमारे ऊपर एक महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है। अनिर्णय से ग्रस्त इस सरकार को उखाड़ फेंकना अब हमारा ऐतिहासिक कर्तव्य है और हमें अपना यह कर्तव्य पूरी शक्ति से निभाना है।■

"देश को कांग्रेस मुक्त बनाने के लिए करेंगे काम"

गोवा में संपन्न भाजपा राष्ट्रीय कार्यकारिणी बैठक के पश्चात् तालेगांव में 9 जून को आयोजित कार्यकर्ता सम्मेलन को संबोधित करते हुए पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राजनाथ सिंह ने कहा कि लोकतंत्र में जो लोकप्रिय होता है वही नेता होता है। श्री नरेंद्र मोदी इस पद के लिए उपयुक्त हैं। श्री मोदी को कमान देने से भाजपा कार्यकर्ताओं में नया जोश आएगा। अभी देश संकट के दौर से गुजर रहा है और कोई बचा सकता है वह श्री नरेंद्र मोदी हैं। श्री मोदी को कमान भाजपा के लिए ही नहीं, बल्कि देश के लिए भी गौरव की बात है।

रैली को संबोधित करते हुए गुजरात के मुख्यमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि गोवा मेरे लिए लकी है। जब भी गोवा में आशीर्वाद मिला है, कामयाबी मिली है। इस मौके पर श्री मोदी ने लोगों से देश को कांग्रेस मुक्त कराने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि मैंने भाजपा के वरिष्ठ नेताओं की अंगुली पकड़कर चलना सीखा है। मैं आज जो कुछ भी हूं, अपने वरिष्ठ नेताओं के कारण ही हूं। उन्होंने कहा कि कई नेताओं ने अपने बच्चों से ज्यादा मेरे लिए वक्त दिया है। मुझे बनाया है। अपने भाषण में उन्होंने कहा कि गोवा मेरे लिए हमेशा लकी रहा है। 2002 में गोवा में ही मुझे गुजरात को आगे ले जाने की जिम्मेदारी सौंपी गई थी। आज गुजरात चीन से स्पर्धा कर रहा है। विकास की ऊंचाइयां छू रहा है। इस बार गोवा में मुझे नई जिम्मेदारी सौंपी गई है, मुझे फिर कामयाबी मिलेगी।

श्री मोदी ने कहा कि कार्यकर्ताओं और देश की जनता की नजरों में चुनाव प्रचार समिति का अध्यक्ष बनना बड़ा सम्मान है। मैं राजनाथ सिंह का आभारी हूं। उन्होंने कहा, सभी वरिष्ठ नेताओं ने शुरूआत से ही अपने बच्चों से ज्यादा मुझे प्यार दिया है। मेरे अंदर जो संस्कार है उसका पूरा श्रेय कार्यकर्ताओं का है। मेरी क्षमताओं पर पार्टी कार्यकर्ताओं का अधिकार है। श्री मोदी ने कहा, किसी भी इंसान को पद से नहीं, बल्कि दिल से बड़ा होना चाहिए। जो भी जिम्मेदारी मुझे दी गई है मैं पूरा करने में कोई कसर नहीं छोड़ूंगा। उन्होंने कहा कि भाजपा ने हमेशा राजनीति को समाज सेवा का माध्यम माना है। ये पार्टी एक सपना लेकर चली है। इस दल के कई नेताओं ने समाजसेवा के लिए पूरा जीवन समर्पित कर दिया।

श्री मोदी ने यूपीए सरकार पर हमला करते हुए कहा, क्या भाजपा के किसी मुख्यमंत्री पर भ्रष्टाचार के आरोप लगते हैं? दिल्ली में जो बैठे है उन पर क्यों लगते हैं ऐसे आरोप? केंद्र सरकार अरबों-खरबों रूपये खर्च करके टीवी पर विज्ञापन देती है कि भारत निर्माण पर हक है मेरा। लेकिन विज्ञापन में हक नहीं शक सुनाई देता है।

वरिष्ठ भाजपा नेता व राज्यसभा में विपक्ष के नेता श्री अरुण जेटली ने कहा कि भाजपा किसी एक परिवार के हाथ में नहीं है। मौजूदा अध्यक्ष श्री राजनाथ सिंह ने पार्टी को एक नई पहचान दी है। जनता समझ गई है कि कांग्रेस राज में देश की दुर्गति ही हुई है। ऐसे में देश को दमदार नेतृत्व की जरूरत है। ■

क्या सीबीआई को खुफिया विभाग का पर्दाफाश करना चाहिए ?

– अरूण जेटली

यूपीए सरकार द्वारा केन्द्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) के दुरूपयोग पर बार-बार टिप्पणियां की गई हैं। इस प्रकार का दुरूपयोग निश्चय ही राजनीतिक प्रयोजन के लिये है। इससे न केवल सीबीआई की साख को भारी नुकसान पहुंचा है अपितु संगठन में व्यावसायिक गुणवत्ता का स्तर भी कम हुआ है। जांच के दौरान साक्ष्य जुटाना बहुत मुश्किल काम हो गया है। जांच राजनीतिक प्रयोजन के कारण त्रुटिपूर्ण बनती जा रही है। सीबीआई मामलों में दोषसिद्धि की दर कम हो गई है।

यूपीए सरकार द्वारा केन्द्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) के दुरूपयोग पर बार-बार टिप्पणियां की गई हैं। इस प्रकार का दुरूपयोग निश्चय ही राजनीतिक प्रयोजन के लिये है। इससे न केवल सीबीआई की साख को भारी नुकसान पहुंचा है अपितु संगठन में व्यावसायिक गुणवत्ता का स्तर भी कम हुआ है। जांच के दौरान साक्ष्य जुटाना बहुत मुश्किल काम हो गया है। जांच राजनीतिक प्रयोजन के कारण त्रुटिपूर्ण बनती जा रही है। सीबीआई मामलों में दोषसिद्धि की दर कम हो गई है।

यह समाचार सीबीआई खुफिया विभाग के वष्ठि अधिकारियों से पूछताछ कर रही है, (इस सम्बंध में) (अधिक महत्वपूर्ण है)। जिस मामले में खुफिया विभाग के अधिकारियों की जांच की गई है वह इशरत जहां की कथित मुठभेड से सम्बंधित है। इस मामले से सम्बंधित मीडिया की रिपोर्टों और कोई दस्तावेजों से पता चलता है कि खुफिया विभाग को अपनी खुफिया जानकारी हासिल करने वाले नेटवर्क, जिसमें इलेक्ट्रानिक निगरानी शामिल है, के माध्यम से यह जानकारी मिली कि लश्करे-तायबा का एक मॉड्यूल वर्ष 2004 में पश्चिमी भारत में सक्रिय था जिसका उद्देश्य गुजरात के मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी की हत्या करना था। अपनी परम्परा के अनुसार आईबी ने गुजरात पुलिस को अलर्ट कर दिया था। इस बात का आसानी से अनुमान लगाया जा सकता है कि केन्द्रीय खुफिया जांच एजेन्सी भी इस ऑपरेशन का एक भाग भी जिसमें मॉड्यूल के चार लोगों को इन्टर्सेप्ट किया गया और जो पुलिस और सुरक्षा एजेन्सियों के साथ मुठभेड़ में मारे गये थे। लश्कर ने लाहौर स्थित अपने मुखपत्र "गाजवा टाइम्स" मे यह स्वीकार किया कि वह लश्करे तौयबा की एक कार्यकर्ता थी, उसके शहीद होने पर उसे श्रद्धांजलि दी गई और भारतीय पुलिस द्वारा उसका पर्दा उठाने पर रोष भी जताया गया था।

मृतक इशरत की मां ने गुजरात उच्च न्यायालय में एक जनहित याचिका दायर की थी। उस याचिका में भारत संघ को भी एक प्रतिवादी के रूप में शामिल किया गया था। उस मामले में भारत सरकार के हलफनामे में दिये गये तर्कों का कड़ा विरोध किया गया था। इसमें यह कहा गया था कि इसकी एजेन्सियों को खुफिया जानकारी मिली थी जिसे राज्य सरकार के साथ साझा किया गया था। केन्द्र सरकार के पास उपलब्ध सभी साक्ष्यों से यह सिद्ध हुआ कि यह एक लश्करे-तौयबा का मॉड्यूल था जिसका नापाक इरादा भारत में एक प्रमुख राजनीतिक नेता की हत्या करना था। राष्ट्रीय जांच एजेन्सी को पाकिस्तानी अमेरिकी डेविड हैडली से पूछताछ करने का अवसर दिया गया, जो 26/11 के मुम्बई नरसंहार का मास्टरमाइंड था। माना जाता है कि हेडली ने पूछताछ करने वाले अधिकारियों को बताया कि इशरत को लश्कर के टॉप कमांडर मुजम्मी ने भर्ती किया था और वह लश्कर की एक मुख्य कार्यकर्ता थी।

दिल्ली में सत्ताधारी पार्टी ने इसे कथित मुठभेड़ माना जिसमें लश्करे-तौयबा के इस मॉड्यूल को खत्म किया गया। भारत सरकार ने गुजरात उच्च न्यायालय के समक्ष अपने हलफनामे को बदलने का निर्णय किया। नये हलफनामे में खुफिया जानकारी के मिलने से इनकार किया गया। हलफनामा देने वाले ने कहा "मेरा यह कहना है कि

इस प्रकार की जानकारी निर्णायक सबूत नहीं है और ऐसी जानकारी पर कार्यवाही करना सरकार और राज्य पुलिस का काम है। इस प्रकार की कार्यवाही से केन्द्र सरकार का कोई लेना-देना नहीं है और न ही वह किसी प्रकार की नाजायज कार्यवाही की अनदेखी करती है या उसका समर्थन करती है''। केन्द्र सरकार का ऐसा कहना राजनीति से प्रेरित है। इशरत मामले में जनहित याचिका में पलटने से भारत सरकार के इस अपरिवर्तनशील स्टैंड को नुकसान पहुंचा है कि जहां "पब्लिक आर्डर" और "कानून और व्यवस्था" राज्य सरकार का विषय है, आतंकवाद के विरूद्ध जंग भारत की सुरक्षा और राष्ट्र की सम्प्रभुत्ता से सम्बंधित है। अत: यह केन्द्र और राज्य की साझा जिम्मेदारी है।

भारत सरकार के ऐसा करने के बाद तत्कालीन प्रतिबंधित लश्करे-तौयबा ने जम्माते-दावा के नये अवतार में इस मॉड्यूल को पहले अपना बताये जाने से इंकार कर दिया और लश्करे-तौयबा की जांच सीबीआई को सौंप दी गई। वर्षो तक गुजरात में कांग्रेस पार्टी की राजनीतिक रणनीति का राज्य के नेतृत्व द्वारा कभी भी अनुसरण नहीं किया गया। इसका अनुसरण उन कुछ असन्तुष्ट पुलिस अधिकारियों, द्वारा किया जाता रहा, जिन्हें राज्य सरकार ने अनुशासनहीनता का दोषी पाया था। ऐसा मानने का एक कारण यह है कि अपने सभी व्यावसायिक मानकों को तोड़ते हुए गुजरात सम्बंधी अधिकांश मामलों में सीबीआई का मार्गदर्शन राज्यपुलिस के इस असन्तुष्ट ग्रुप द्वारा किया जा रहा है।

मैंने गत कुछ वर्षो में उन कुछ संवेदनशील मामलों के दस्तावेजों की जांच की है, जो गुजरात और राजस्थान में भाजपा के प्रमुख नेताओं के विरूद्ध दर्ज किये गये हैं। दो मामलों में गुजरात के पूर्व गृहमंत्री का नाम नगण्य साक्ष्य के आधार पर जोड़ा गया। जब अभियोजन के निदेशक ने साक्ष्य की अपर्याप्त होने को रेखांकित किया तो इससे पता चलता है सीबीआई के वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा यह टिप्पणी की गई कि यदि सीबीआई को मुख्यमंत्री तक पहुंचना है तो अमित शाह को अपराधी के रूप में शामिल करना जरूरी है। ऐसी नोटिंग करने वाले जांच अधिकारियों और इस नोटिंग को स्वीकृति देने वाले अधिकारियों को न केवल दंडित करना चाहिए बल्कि सीबीआई से हटाया जाना चाहिए।

मैंने गत कुछ वर्षों में उन कुछ संवेदनशील मामलों के दस्तावेजों की जांच की है, जो गुजरात और राजस्थान में भाजपा के प्रमुख नेताओं के विरूद्ध दर्ज किये गये हैं। दो मामलों में गुजरात के पूर्व गृहमंत्री का नाम नगण्य साक्ष्य के आधार पर जोड़ा गया। जब अभियोजन के निदेशक ने साक्ष्य की अपर्याप्त होने को रेखांकित किया तो इससे पता चलता है सीबीआई के वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा यह टिप्पणी की गई कि यदि सीबीआई को मुख्यमंत्री तक पहुंचना है तो अमित शाह को अपराधी के रूप में शामिल करना जरूरी है।

राजस्थान के पूर्व गृहमंत्री श्री गुलाब चन्द्र कटारिया के विरूद्ध हाल के मामले में आरोप पत्र (चार्जशीट) एक काल्पनिक कहानी जैसा लगता है। राजस्थान के पूर्वमंत्री राजेन्द्र राठौर के विरूद्ध एक अन्य चार्जशीट पर न्यायिक टिप्पणी की गई क्योंकि वह किसी साक्ष्य पर आधारित नहीं थी। इन सभी मामलों में जिन राजनीतिक नेताओं को टार्गेट बनाया गया था, उन्हें जमानत पर आसानी से रिहा कर दिया गया। सरकारें शाश्वत नहीं होतीं। मुझे आशा है कि किसी न किसी दिन कोई जांच आयोग सीबीआई के कार्यकरण, इसके राजनीतिकरण और उपरोक्त सभी मामलों की जांच करेगी।

इशरत मामले पर दोबारा आते हुए मुझे यह कहना है कि सीबीआई ने गुजरात पुलिस के कुछ अधिकारियों को गिरफ्तार किया है, उन्हें जमानत पर रिहा कर दिया गया क्योंकि चार्जशीट निर्धारित अवधि के दौरान फाइल नहीं की गई थी। चूंकि मॉड्यूल को खत्म करने में केन्द्रीय खुफिया जांच एजेन्सी शामिल थी, सीबीआई ने अब खुफिया विभाग के कार्यकरण की पोल खोलने का निर्णय किया है। मोदी-फोबिया की कीमत अब खुफिया विभाग को चुकानी होगी। इसकी वरिष्ठ अधिकारियों से कड़ी पूछताछ की जायेगी। उनसे खुफिया जानकारी हासिल करने के तरीकों के बारे में ब्यौरा पूछा जायेगा। उनसे उनके द्वारा खुफिया जानकारी हासिल करने के तौर-तरीकों की वैधता के बारे मे पूछा जायेगा। उनसे हासिल की गई खुफिया जानकारी की प्रामाणिकता के बारे में प्रश्न पूछे जायेंगे। लश्करे-तौयबा के खिलाफ हासिल की गई जानकारी और उसे गुजरात पुलिस को दिये जाने के पीछे उनके मकसद के बारे में उनसे पूछा जायेगा। केवल पाकिस्तान और लश्करे-तौयबा इस पर खुशियां मनायेंगे। दिल्ली की अदूरदर्शी सरकार ने संस्थानों को समाप्त करने के दुष्परिणामों को महसूस नहीं किया है। गुजरात सरकार को परेशान करना, चाहे इससे भारत का सुरक्षा तंत्र बर्बाद क्यों न हो जाये, कांग्रेस पार्टी का स्पष्ट उद्देश्य है। ■

(लेखक वरिष्ठ भाजपा नेता व राज्यसभा में विपक्ष के नेता हैं)

उपचुनावों में भाजपा की शानदार जीत कांग्रेस की करारी हार

हाल ही में गुजरात, बिहार, उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल और महाराष्ट्र में चार लोकसभा और छह विधानसभा सीटों के लिए उपचुनाव हुए। इन चुनावों में जहां भाजपा की शानदार जीत हुई वहीं कांग्रेस की करारी हार हुई है।

गत 5 जून 2013 को घोषित परिणाम के अनुसार गुजरात में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने लोकसभा की दो सीटों-पोरबंदर और बनासकांठा का उपचुनाव जीत लिया है। ये दोनों सीटें पहले कांग्रेस के पास थीं। भारतीय जनता पार्टी के उम्मीदवार विठ्ठल रदाड़िया ने पोरबंदर सीट कांग्रेस के वीनूभाई अमीपारा को पराजित कर और भाजपा के ही हरिभाई चौधरी ने बनासकांठा लोकसभा सीट कांग्रेस की उम्मीदवार कृष्णा बेन मुकेश कुमार गड़वी को पराजित कर जीती। भाजपा गुजरात की जैतपुर, लिमड़ी, धौरजी और मोरवा हादफा विधानसभा सीटों पर भी विजयी रही। भाजपा ने गुजरात की सभी 6 सीटें (लोकसभा -2, विधानसभा-4) कांग्रेस से छीनीं।

पश्चिम बंगाल में हावड़ा लोकसभा सीट पर तृणमूल कांग्रेस के प्रसून बनर्जी को विजय मिली है। उन्होंने अपने निकटतम प्रतिद्वंद्वी मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के उम्मीदवार को हराया। बिहार में राष्ट्रीय जनता दल के उम्मीदवार श्री प्रभुनाथ सिंह महाराजगंज लोकसभा सीट से निर्वाचित घोषित किए गए। उन्होंने अपने निकटतम प्रतिद्वंद्वी जनता दल यूनाइटेड के उम्मीदवार को एक लाख सैंतीस हजार से अधिक मतों से हराया। उत्तर प्रदेश में सत्ताधारी समाजवादी पार्टी ने हंडिया विधानसभा की सीट पर जीत ली। कांग्रेस ने केवल महाराष्ट्र में यवतमाल विधानसभा सीट ही जीत पाई।

शिव शक्ति ने अमेरीका में प्रस्तुत किया शोध-पत्र

कमल संदेश के कार्यकारी सम्पादक डॉ. शिव शक्ति बक्सी ने जून 2013 के प्रथम सप्ताह में संयुक्त राज्य अमेरीका का दौरा करते हुए विभिन्न विषयों पर अपने विचार प्रस्तुत किए। श्री बक्सी इंडिया स्टडीज प्रोग्राम, हूस्टन विश्वविद्यालय द्वारा एक विशेष कार्यक्रम में भाग लेने के लिए हूस्टन गए थे जहां उन्होंने "Formalisation of Civilization Knowledge System" पर अपने विचार रखे। 1 और 2 जून 2013 को ग्लोबल धर्म फाउण्डेशन ने दो दिन का एक और सम्मेलन आयोजित किया था। इस सम्मेलन में भी उन्होंने 'Colonialism and the Concept of Modernity, Renaissance and Reform: Indian Experience' पर अपना शोध-प्रबंध प्रस्तुत किया। इस प्रबंध में उनका मानना था कि 18वीं-19वीं शताब्दी में भारत में ऐसा कोई अन्धकार युग 'Dark Age' कभी नहीं था, जैसाकि बहुत से औपनिवेशिक इतिहासकारों की धारणा रही है।

University of Ghent, Belgium के डॉ. एस.एन बाल गंगाधर ने 'Losing our youth: Indian Tradition and their future' पर अपने विचार रखे। प्रो. भरत गुप्ता ने 'Murti Puja and 'Re-establishing the Shastras in Education' के परिप्रेक्ष्य में अपनी बात कही। जाफरी आर्मस्ट्रांग ने पश्चिमी देशों में वेदांत और योग का विवेचनात्मक दृष्टिकोण पेश किया। डॉ. जेकब डी रूबर और डॉ. शिव शक्ति बक्सी ने भारत में उपनिवेशवाद के प्रभाव पर अपना गहन दृष्टिकोण प्रस्तुत किया।

डॉ. शिवशक्ति बक्सी ने अपने शोध-पत्र में यह तर्क दिया कि क्योंकि 'अंधकार युग' कभी था ही नहीं तो 'पुनर्जागरण' (Renaissance) और 'सुधार' (Reform) की बात का कोई आधार कहां रह जाता है। आयोजन में भाग लेने वाले सभी व्यक्तियों ने उनके प्रस्तुतीकरण की जमकर प्रशंसा की।